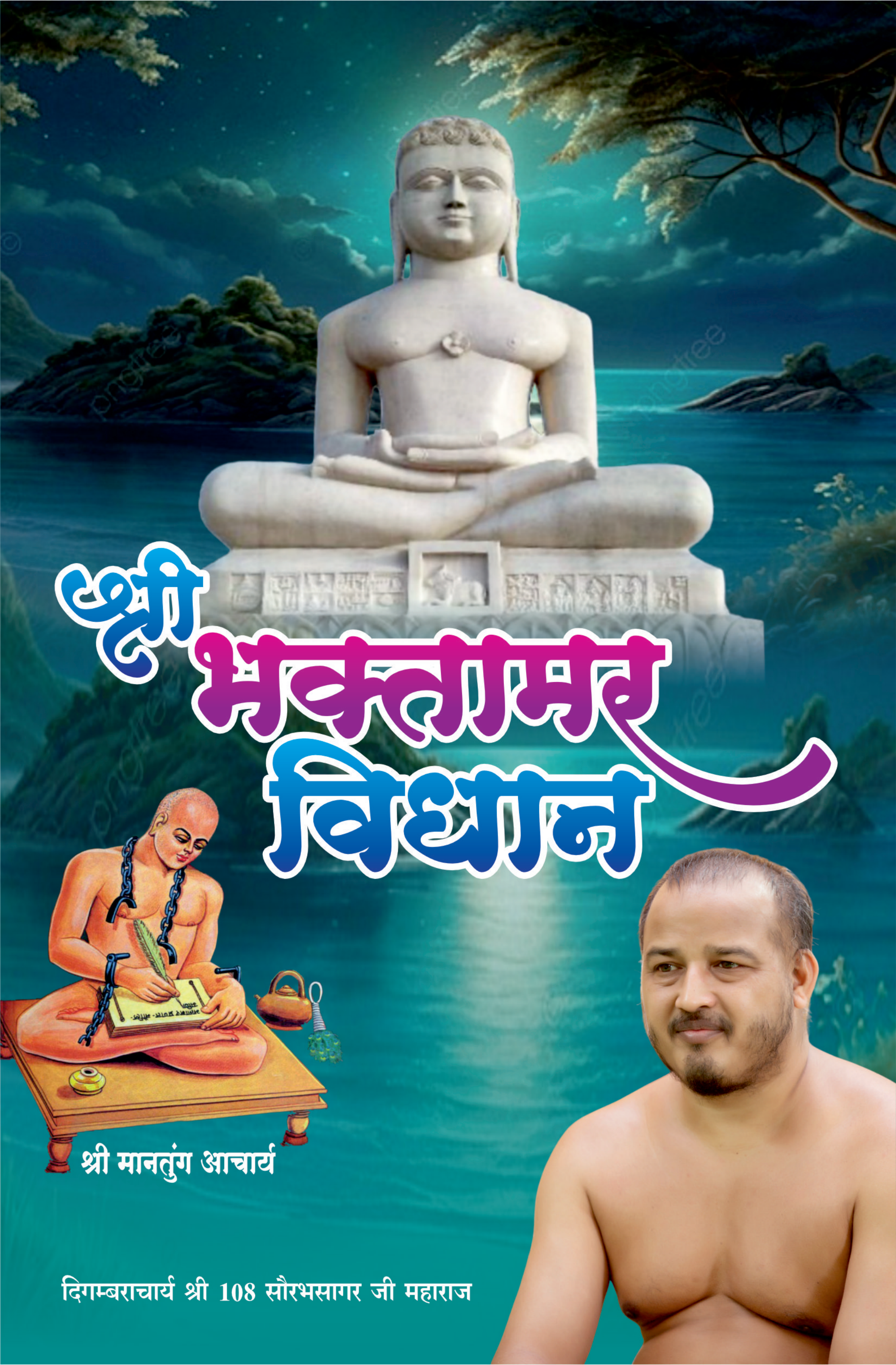
श्री
भक्तामर
विधान
श्री मानतुंग आचार्य
दिगम्बराचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।

श्री धरसेनाचार्य देव पुष्पदन्त एवं भूतबलि मुनिवरों
को षट्खण्डागम का उपदेश देते हुए।

श्री मानतुंगाचार्य विरचित

श्री भक्तामर विधान

(आदिनाथ स्तोत्र)

श्री 1008 आदिनाथ भगवान

सौरभांचल, गन्नौर (हरियाणा)

पद्यानुवादक

दिगम्बर जैनाचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज

कृति	:	**श्री भक्तामर विधान (आदिनाथ स्तोत्र)**
शुभाशीष	:	**पुष्पगिरि प्रणेता परम पूज्य** **गणाचार्य श्री 108 पुष्पदंतसागर जी महाराज**
कृतिकार	:	**प. पू. दिगम्बराचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज**
संस्करण	:	एकादश, दिसम्बर 2025 (1000 प्रतियाँ)
प्रकाशक	:	सौरभांचल प्रकाशन (क्र. 120)
प्राप्ति स्थल	:	1. **श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र,** पुष्पगिरि, सोनकच्छ, जिला देवास (म.प्र.) फोन : 07270-22870 2. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थ सौरभाँचल,** श्री श्रुत स्कन्ध मन्दिर जी.टी. करनाल रोड, गन्नौर (हरियाणा) 3. **श्री दिगम्बर जैन मंशापूर्ण महावीर क्षेत्र** **जीवन आशा हॉस्पिटल** कावड़ मार्ग, गंगनहर, मुरादनगर (गाजियाबाद)
मूल्य	:	रु. 60/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली मो.: 9811374961, 9811363613 **pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com**

"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो" एक ऐतिहासिक सत्य

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

जैन धर्म में देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा ही सम्यग्दर्शन में कारण है। चौबीस तीर्थंकर एवं 1452 गणधर तथा द्वादशांगमय श्रुतज्ञान होने के उपरांत भी वर्तमान काल में तीर्थंकर महावीर स्वामी का शासन काल होने के कारण मंगल स्वरूप वे ही हैं इसलिए **"मंगलं भगवान् वीरो"** कहकर **"दीपावली पर्व"** को महत्व दिया जाता है तथा उनके प्रथम गणधर गौतम स्वामी की दीक्षा की स्मृति को **"मंगलं गौतमो गणी"** कहकर **"गुरु पूर्णिमा"** के रूप में महत्व दिया जाता है तथा 633 वर्ष बीतने के उपरांत श्रुत विच्छेद न हो जाये इसलिए मंत्र ज्ञाता धरसेनाचार्य ने अपना अंग श्रुतज्ञान आचार्य पुष्पदंत स्वामी को समर्पित किया और कहा भी है–

जयउ धरसेण णाहो जेण महाकम्म पयडि पाहुड सेलो।
बुद्धि सिरेणुद्धरियो समप्पियो पुप्फदंतस्स।।

(ध.पु.भा.-2)

अर्थात् वे धरसेन स्वामी जयवंत हों, जिन्होंने **महाकर्मप्रकृति** प्राभृत रूपी पर्वत को अपनी बुद्धिरूपी मस्तक पर धारण करके **आचार्य पुष्पदंत** को समर्पित किया।

उनसे शिक्षित शिष्य **आचार्य पुष्पदंत** ने **सर्वप्रथम णमोकार मंत्र** को निवद्ध मंगल कर षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखना प्रारंभ किया एवं गणधर वलय मंत्र के साथ स्वामी भूतबलि आचार्य ने ग्रन्थ पूर्ण किया। इस उपलक्ष्य में **"श्रुतपंचमी"** पर्व मनाया जाता है यही ऐतिहासिक सत्य है इसलिए शुद्ध ग्रन्थ के प्रथम लेखक के रूप में **ऋषि सभा के अधिपति आचार्य पुष्पदंत स्वामी** का स्मरण करते हुए **"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो"** कहा जाता है।

ये तीनों ही जैनधर्म के उत्कृष्ट मंगल स्वरूप हैं। इसलिए धवलाकार वीरसेन स्वामी ने कहा–

"तदो मूलतंत कत्ता वढ्ढ़माण भडारयो, अणुतंत कत्ता गौदम स्वामी उवतंत कत्तारा भूदबली पुप्फदंतादयो वीयराय दोष मोहा मुणिवरा"

(ध.पु.भा.-1, पृ:73)

अर्थात् मूलग्रंथ कर्ता वर्द्धमान भट्टारक अणुतंत कर्ता गौतम स्वामी, उपतंत ग्रंथ कर्ता भूतबलि पुष्पदंतादि, वीतराग दोष मोह रहित मुनिवर हैं।

इसे ही शुद्ध दिगम्बर आगम प्रमाणानुसार निम्न श्लोक के रूप में कहा जाता है–

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

वृहत् शान्तिधारा पाठ

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्-रत्नत्रयरूपाय दिव्यतेजोमूर्त्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणसहिताय, अनन्तचतुष्टयसहिताय, समवसरण-केवलज्ञान-लक्ष्मीशोभिताय, अष्टादश-दोषरहिताय, षट्-चत्वारिंशद्-गुणसंयुक्ताय, परमेष्ठि-पवित्राय, सम्यग्ज्ञानाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय, अनंत-संसार- चक्रप्रमर्दनाय अनन्तज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे उपसर्गविनाशनाय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय अस्माकं (अमुक राशिनामधेयानां) व्याधिं घ्नन्तु। श्री जिनाभिषेकपूजन प्रसादात् अस्माकं सेवकानां सर्वदोष, रोग, शोक, भय, पीड़ा, विनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष, दोष, कल्मषाय, दिव्य-तेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्न, प्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्वारिष्ट, शान्ति, कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्न-शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु-कुरु स्वाहा।
मम कामं शान्तिं-शान्तिं। रतिकामं शान्तिं-शान्तिं। बलिकामं शान्तिं-शान्तिं। क्रोधं-पापं-वैरं च शान्तिं-शान्तिं। अग्निवायुभ्यं शान्तिं-शान्तिं। सर्वशत्रु-विघ्नं शान्तिं-शान्तिं। सर्वोपसर्गं शान्तिं-शान्तिं। सर्वविघ्नं शान्तिं-शान्तिं। सर्वराज्य दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं। सर्वचौर दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं। सर्व-सर्प-वृश्चिक-सिंहादिभयं शान्तिं-शान्तिं। सर्वग्रहभयं शान्तिं-शान्तिं। सर्वदोषं व्याधिं डामरं च शान्तिं-शान्तिं। सर्वपरमंत्रं शान्तिं-शान्तिं। सर्वात्मघातं परघातं च शान्तिं-शान्तिं। सर्वशूल कुक्षि अक्षि शिरो ज्वररोगं शान्तिं-शान्तिं। सर्वनरमारिं शान्तिं-शान्तिं। सर्वगजाश्व गौ-महिष-अजमारिं शान्तिं-शान्तिं। सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं शान्तिं-शान्तिं। सर्वराष्ट्रमारिं शान्तिं-शान्तिं। सर्वक्रूर-वेताल डाकिनी-भयानि शान्तिं-शान्तिं। सर्वापस्मारिं शान्तिं-शान्तिं। अस्माकं सर्व अशुभकर्म-जनित-दुःखानि शान्तिं-शान्तिं। दुष्टजनकृतान्-मंत्र-तंत्र-दृष्टि-मुष्टि-छल-छिद्रदोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्वदुष्ट-देव-दानव-वीर-नर-नाहर-सिंह-योगिनी-कृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्व-अष्टकुली-नागजनित-विषभयानि शान्तिं-शान्तिं। सर्वस्थावर जंगम वृश्चिक सर्पादिकृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्वसिंहाष्टा-पदादि कृतदोषान शान्तिं-शान्तिं।

परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि कृतदोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्व कर्माष्टकं शान्तिं-शान्तिं। ॐ ह्रीं अस्मभ्यं चक्र-विक्रम-सत्त्व-तेजो-बल-शौर्य-वीर्य-शान्ती: पूरय पूरय। सर्वजीवानंदनं कुरु कुरु जनानंदनं कुरु कुरु भव्यानंदनं कुरु कुरु सर्व गोकुलानंदनं कुरु कुरु। सर्वराजानंदनं कुरु कुरु। सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटंब-पतन-द्रोणमुख-संवाहनानंदनं कुरु कुरु। सर्वानंदनं कुरु कुरु स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-र्व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेममारोग्यं, स्वस्तिरस्तु विधीयते।।

श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। सर्व जीव कल्याण मस्तु। शुभ अस्तु। सुकीर्ति रस्तु। सर्व रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु। सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्र वृद्धि रस्तु। अस्माकं तुष्टि। पुष्टि। समृद्धिरस्तु। सुखमस्तु। दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्र धनानि सदा सन्तु। सद्धर्म श्रीबलायुरारोग्यै- श्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज पूजित सुरराय॥
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद शीश झुकायें॥

ॐ ह्रीं श्रीं *वृषभादि वीरान्तरेभ्य: शान्तये शान्तिधारा स्वाहा।*

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं इति ह्रौं सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीर जिनेद्राय नम: रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञ:, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्र:।।

अर्घ

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्यकै:।
धवल मंगल गान रवाकुले जिनगृहे अभिषेकमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वर्धमानपर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो महाशांतिधाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

इह विधि ठाडो होयके, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥
अनंत चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा-हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥5॥
मैं वंदौ जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाय॥6॥
भविजन को भवकूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥7॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥8॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥9॥
चक्री खगधर इंद्रपद, मिलै आपतैं आप।
अनुक्रम ते शिवपद लहैं, नेम सकल हनि आप॥10॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥12॥
थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥13॥
रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥14॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥15॥
तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥16॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥18॥
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हो, नेक निहार निकार॥19॥
जो मैं कहहूँ औरसों, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार॥20॥
वन्दों पाँचों परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥21॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमगसाधक साधु नमि, रच्यो पाठसुखदाय॥22॥
मंगल मूर्ति परमपद, पंचधरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥23।
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंतदेव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव॥24।
मंगल आचारज मुनि मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दौं मन वच काय॥25॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥26॥
या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह भवसागर दृढ़ पोत॥27॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् (नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

मंगल कलश स्थापना

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदंताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।
ॐ जय! जय!! जय!!! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

1. **सर्वप्रथम शुद्ध जल से स्वयं को एवं हाथों को शुद्ध करें–**
   ॐ ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा।
2. **तत्पश्चात् जल से भूमि शुद्धि करें–**
   ॐ ह्रीं भूः शुद्धयतु स्वाहा।
3. **सकलीकरण करें–**
   ॐ ह्राँ णमों अरिहंताणं मम शीर्ष रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रीं णमों सिद्धाणं मम मस्तक रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रूं णमों आयरियाणं मम हृदय रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रौं णमों उवज्झायाणं मम नाभि रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रः णमों लोए सव्वसाहूणं मम पादौ रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
   ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
4. **अक्षत् चावल लेकर जमीन पर (जहाँ पर कलश स्थापित करना हो वहाँ) स्वास्तिक बनावें।**
   ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणे नमो नमः स्वास्ति-2 जीव-2 नन्द-2 वर्द्धस्य-2 विजयस्व-2 अनुशाधि-2, पुनीहि-2 पुण्याहं-2 मांगल्यं मांगल्यं पुष्पाञ्जलि। **(पुष्प क्षेपण करें)**
5. ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमो अर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन मंगल कलशं स्थापितं करोमि स्वाहा। **(यह मंत्र पढ़कर कलश स्थापित करें।)**
   अपनी जाति, गौत्र, दादा, पिताजी, माताजी, स्वयं, पत्नी, बच्चों का नाम तथा सम्वत्, माह, पक्ष, तिथि, वार, बोलकर कलश स्थापित करें कलश में 5 हल्दी, 5 सुपाड़ी, पीली सरसों, सबा रुपया, धनिया आदि मांगलिक वस्तुएं डाले।
6. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अत्र स्थाने विराजित क्षेत्रपाल देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः ठः स्थापना इदं अर्घं समर्पयामि। **(नैवेद्य पुष्प आदि अर्घ चढ़ायें)**
7. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अत्र स्थाने विराजित सर्व वास्तु देवा आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः ठः स्थापना इदं अर्घं समर्पयामि। **(अर्घं समर्पण करें)**

8. ॐ ह्रीं आँ क्रौं वायु कुमार देवाय अत्र स्थाने वायु शुद्धि कुरू-कुरू हूँ फट् स्वाहा। **(हाथों से हवा करें अर्घ समर्पयामि)**

9. ॐ ह्रीं आँ क्रौं मेघ कुमार देवाय अत्र स्थाने भूमिं शुद्धि कुरू-कुरू अँ हँ सँ वँ क्षँ ठँ क्ष: फट् स्वाहा **(अर्घं समर्पयामि)**

10. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अग्नि कुमार देवाय भूमि ज्वलय-2 फट् स्वाहा। **(कपूर जलावें) (अर्घं समर्पयामि)**

11. ॐ ह्रीं आँ क्रौं षष्टिसहस्त्र संख्येभ्यो नागकुमार देवाय जलाञजलि स्वाहा। **(जलं अर्घं समर्पयामि)**

12. ॐ ह्रीं आँ क्रौं इन्द्र, आग्ने, यम, नैऋत्य, वरूण, पवन, कुबेर, ईशान, सोम, धरणेन्द्र दिग्पाल देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठ: ठ: स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**

13. ॐ ह्रीं आँ क्रौं पंचदश तिथि देवता आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठ: ठ: स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**

14. ॐ ह्रीं आँ क्रौं आदित्य चन्द्र-मंगल बुध-गुरू शुक्र-शनि राहु-केतु नवग्रह देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठ: ठ: स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**

15. ॐ ह्रीं नमोऽर्हदभ्यो पंच परमेष्ठिभ्यो: नम:। **(अर्घं)**

16. ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्त चतुर्वीस तीर्थंकरेभ्यो: नम:। **(अर्घं)**

17. ॐ ह्रीं वृषभसेनादि गौतमान्त गणधरेभ्यो: नम:। **(अर्घं)**

18. ॐ ह्रीं मम कुल गुरूवे नम:। **(अर्घं समर्पयामि)**

19. ॐ ह्रीं आँ क्रौं गौमुखादि चतुर्विंशति यक्षादि देवाय अर्घं समर्पयामि।

20. ॐ ह्रीं आँ क्रौं चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावति आदि चतुर्विंशति यक्षी देवाय नम:। **(अर्घं समर्पयामि)**

21. ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं धृति कीर्ति बुद्धि शान्ति पुष्टि लक्ष्मी देवीभ्यो नम:। **(अर्घं समर्पयामि)**

22. मम कुल गृह देवो जिनेश्वरो तीर्थंकरो गधधर गुरूओं, मम गुरू भक्ति प्रसादात् प्रसन्नो भवतु मम कुल (जाति) गोत्र का नाम स्मरण करें। मम् धन धान्य पुत्र पौत्रादिक सौख्यं शांतिं पुष्टिं आरोग्यं अक्षीणं भवत् स्वाहा।

23. **बीजाक्षर मंत्रों से सज्जित, मंगल कलश महान है।**
शुभ संकल्पों का दाता यह, कल्प वृक्ष समान है।।
हो विधान पूजा शुभ कारज, कलश क्लेश सब दूर करें।
अर्घावली मंत्रों को अर्पित, सुख शांति भरपूर करें।।
ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं बीजाक्षर युक्त कलश यन्त्राय नम: अर्घम् निर्वापामीति स्वाहा।

24. कलश के सामने दीप धूप कर इष्ट देव की स्तुति करें। अर्घ चढ़ाकर पुन: क्षमा याचना कर विसर्जन करें।

अर्घ-मंशापूर्ण महावीर स्वामी

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया
अक्षत कुसुम चरूवर पावन दीप धूप वन्दन भाया
सिद्ध शिला फल चाह लिये मैं अष्ट द्रव्य चढ़ाऊँगा
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया।।
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष।।

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

अर्घ-आचार्य श्री सौरभ सागर जी

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन श्रृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय! जय!! जय!!! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।

अपराजित मंत्राऽयं, सर्व विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः।।3।।

एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।

कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण-पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनसहस्रनाम का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले-जिनगृहे-जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिन-अष्टाधिक-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले-जिनगृहे-जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायकमनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष-मयाऽभ्यधायि॥1॥
स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।

स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय।।2।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक विततैक चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल सकलायत विस्तृताय।।3।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्।।4।।
अर्हन्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति विधान

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

।।इति श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-स्वस्ति-मंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥1॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥3॥

प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥4॥

जंघा-नल-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु, प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण स्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥5॥

अणिम्नि दक्षाः कुशलाः महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपूर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥6॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥7॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणंचरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥8॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी र्विषाविषा दृष्टि-विषा विषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयो नः॥9॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधु-स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्शयो नः॥10॥

॥इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

''देव-शास्त्र-गुरु-जिनतीर्थ-अकृत्रिम तीर्थ तीस चौबीसी विद्यमान 20 तीर्थंकर-निर्वाण भूमि'' की समुच्चय पूजन *

(जैनाचार्य श्री सौरभ सागर जी महाराज द्वारा रचित)

परम् देव अरिहंत सिद्ध गुरु, आचारज साधु उवज्झाय।
माँ जिनवाणी बीस जिनेश्वर, विद्यमान तीर्थंकर ध्याय।।
तीर्थंकर मुनि मोक्ष भूमि अरुँ, अकृत्रिम जिन वंदन है।
तीस चौबीसी तीर्थंकर का, आह्वाहन स्थापन है।।

ॐ ह्रीं अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिन बिम्ब समूह-तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह-अत्र अवतर अवतर-अत्र तिष्ठ-तिष्ठ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

जल

जल जीवन रक्षित करता है, शांत स्वभावी सरल तरल।
चरणों में जल अर्पित करता, पाने को शुभ मोक्ष महल।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय **जलं** निर्वपामीति स्वाहा।

---

*कभी-कभी समय की अल्पता के कारण आराधना के तीव्र भाव उत्पन्न होते हैं उन सभी आराधना चाहने वालों के लिए आचार्यश्री ने महाउपकार करके एक साथ "पंच परमेष्ठी, माँ जिनवाणी, विद्यमान बीस तीर्थंकर, अढाई द्वीप, सम्पूर्ण निर्माण भूमि, अकृत्रिम जिनबिम्ब (प्रतिमा) एवं तीस चौबीसी" की समुच्चय पूजा की रचना की है।

चंदन

ताप विनाशक तन का चंदन, पूज्य चरण में लें आया।
क्रोध द्वेष प्रतिशोध त्यागकर, शीतल सुरभित गुण गाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह संसार ताप विनाशनाय **चंदनं** निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

सिद्ध शिला का वासी आतम, पापी बन भव घूम रहा।
त्रय योगों को स्थिर करके, द्रव्य चढ़ा मन झूम रहा।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अक्षय पद प्राप्ताय **अक्षतं** निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम भोग का रोग भयंकर, मन बगियाँ में खिलता हैं।
वैरागी प्रभु के सम्मुख आ, काम भाव सब मिटता हैं।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह कामबाण विनाशनाय **पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

पतितोद्धारक आप निराकुल, क्षुधारोग से पीड़ित हूँ।
धर्म ध्यान की औषध पाकर, भक्ति भाव से जीवित हूँ।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह क्षुधा रोग विनाशनाय **नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्या भाव का महा तिमिर प्रभु, काल अनादि से भीतर।
तव दर्शन की शुभ्र दीप से, ज्योतिर्मय आतम अंदर।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोहांधकार विनाशनाय **दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

तव चरणों की धूपायन में, कर्म धूप खेनें आया।
धर्म गंध चारों दिश फैले, मन पूजा कर हर्षाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अष्ट कर्म विनाशनाय **धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।

फल

भक्ति भाव की दिव्य तरु में, चढ़कर रत्नत्रय पाऊँ।
जिन गुण फल आतम में प्रगटे, सिद्धालय में रम जाऊँ।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोक्षफल प्राप्ताय **फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यं

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

पंचपरम गुरु परमेष्ठी हैं, पूज्य पुरुष अरिहंत मुनि।
सिद्ध निरामय निराकार हैं, अष्ट कर्म के कष्ट हनि।।1।।

आचारज उवज्झाय साधुगण, ज्ञानध्यान तप लीनयति।
णमोकार नित जपकर करता, चरण वंदना जैनमति।।2।।

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व प्रभो
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांश पद, वासु विमलानन्त नमो।।3।।

धर्म शान्ति कुन्थु अरनाथा, मल्लि मुनिसुव्रत नमि जपूं।
नेमी पारस महावीर जी, वर्तमान चौबीसी भंजू।।4।।

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी, अष्टापद पावा गिरनार।
चम्पापुर सह ढाई द्वीप की, मोक्ष भूमि बन्दूँ शतवार॥5॥

सीमंधर से अजितवीर्य तक, विद्यमान श्री बीस जिनेश।
क्षेत्र विदेह में देह रहित हो, हरते सारे कर्म क्लेश॥6॥

आठ कोटि अरुँ छप्पन लक्षा, सत्तावन हज्जार कहें।
चार शतक इक्यासी प्रतिमा, नमन उन्हें शतवार करें॥7॥

जिनप्रतिमा अकृत्रिम जग में, दिव्य रूप है वृहद विशाल।
ऊर्ध्व अधो अरुँ मध्य लोक के, जिन प्रतिमा बन्दूँ त्रयकाल॥8॥

ऐरावत और भरत क्षेत्र के, तीर्थंकर गुणगान करूँ।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीस चौबीसी ध्यान धरूँ॥9॥

प्रभु पूजन दर्शन वंदन से, निद्धत निकाचित कर्म कटें।
अनुपम आत्मिक अव्यय सुख का, सूरज निज आतम प्रगटे॥10॥

दिव्य ध्वनि की निर्मल वाणी, माँ जिनवाणी कहलाती।
दिव्य ज्ञान दे अन्तर्मन की, कल्मषता सब धो जाती॥11॥

परमेष्ठी जिनवाणी माता, क्षेत्र विदेह के बीस जिनेश।
सिद्ध भूमि अकृत्रिम प्रतिमा, तीस चौबीसी के तीर्थेश॥12॥

देव शास्त्र गुरु तीरथ भूमि, तीर्थंकर को सदा नमूँ।
अर्घावली चरणों में देकर, शुद्धातम को सदा भजूँ॥13॥

दोहा- **कर्म रहित जिनदेव की, भक्ति करे कल्याण।**
"सौरभसागर" नित नमें, पाने शाश्वत धाम॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जयमालाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **परमेष्ठी श्रुत बीस जिन, तीस चौबीसी ध्याय।**
अकृत्रिम जिनराज भज, सिद्ध भूमि सिर नाय॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री भक्तामर विधान

माण्डला

कुल अर्घ्य 48 : पूर्णार्घ्य 3

प्रथम वलय-8, द्वितीय वलय-16, तृतीय वलय-24

भक्तामर व्रत विधि

व्रतारम्भ : किसी भी माह की अष्टमी या चतुर्दशी को

अवधि : 1 वर्ष से 4 वर्ष 48 दिन

व्रत पूजा : व्रत वाले दिन भक्तामर विधान, पूजा या पाठ करें।

जाप : ॐ ह्रीं क्लीं ऐं श्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

व्रत विधि : 48 उपवास या एकासन या चार या छः रस त्याग

श्री भक्तामर विधान प्रारम्भ

स्थापना

हे दिव्य विभूति आदि जिनेश्वर, मोक्ष सुखों के कर्ता हो।
भव अर्णव के तारण हारे, लोकालोक के दृष्टा हो॥
आह्वानन संस्थापन कर मन, गद्‌गद हो पुलकित होता।
जगत्पूज्य हे सिद्ध स्वरूपी, दर्शन कर प्रमुदित होता॥
हृदय विराजो संकटहर्ता, जगति का उद्धार करो।
पाद पद्‌म की पूजा करता, मम भक्ति स्वीकार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षर-सम्पन्न! श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षर-सम्पन्न! श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षर-सम्पन्न! श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

दिव्य ध्वनि की पावन गंगा, निर्मल वचनों से बहती।
भव्य जीव के हृदय कमल को, सिंचित कर पावन करती॥
जल से भिन्न कमल वत् जीकर, निज दर्शन कर पाऊँगा।
चरणों में जल की धारा दें, जन्म जरा विनशाऊँगा॥

ॐ ह्रीं परम-शान्ति-विधायकाय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

समवशरण में चारों दिश में, मुख अम्बुज दर्शन होता।
क्रोध बैर क्षण में नश जाता, मन पावन पुलकित होता॥
पाप ताप संताप हरण को, चंदन चरण चढ़ाऊँगा।
आदिनाथ की पूजा करके, शीघ्र अमरता पाऊँगा॥

ॐ ह्रीं परम-शान्ति-विधायकाय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

शुभ्र अभ्र-सा शाली तन्दुल, ऋजु भावों से मैं लाऊँ।
कर्म कलंक मिटाओ स्वामी, सुख सिन्धु में रम जाऊँ॥
आदिनाथ कैलाश गिरी से, अक्षय निधि को पाया है।
चरण कमल में अक्षत अर्पित, मन मेरा हर्षाया है॥

ॐ ह्रीं परम-शान्ति-विधायकाय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अक्षयपद-प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

सूर्योदय में खिला खिला, संध्या में ये मुरझाता है।
क्षण भंगुर जीवन की कलियाँ, पुष्प पाठ सिखलाता है॥
चंचल मन स्थिर हो जायें, कामबाण मेटो स्वामी।
सुमन चढ़ाकर सुमन खिलाऊँ, शक्ति दो अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं परम-शान्ति-विधायकाय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

जिसके खातिर प्रतिदिन प्रभुवर, पाप ही पाप कमाता हूँ।
क्षुधावेदनी नाश करन को, चरुवर चरण चढ़ाता हूँ॥
तीर्थंकर हे आदि प्रभुजी, वर्षों तक उपवास किये।
महातपस्वी ज्ञानी ध्यानी, कर्म कालिमा नाश किये॥

ॐ ह्रीं परम-शान्ति-विधायकाय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

घृत का दीपक मृणमय मनहर, जगमग जगमग करता है।
बाहर का तम पीकर वह तो, अंधकार सब हरता है॥
चरण कमल में दीप समर्पित, केवल दीप जलाऊँगा।
तेरे सम निश्चल ज्योति पा, अजर अमर हो जाऊँगा॥

ॐ ह्रीं परम-शान्ति-विधायकाय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः मोह-अंधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

चिन्मय ज्ञायक की शुचि सरिता, ध्यान अवस्था में बहती।
तप की अग्नि प्रज्वल्लित हो, अष्ट कर्म क्षण में दहती॥
आदिनाथ के चरण कमल में, भक्ति धूप मैं खेऊँगा।
निज पद पाने जिन पद पूजा, का आनन्द मैं लेऊँगा॥

ॐ ह्रीं परम-शान्ति-विधायकाय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

रंग बिरंगे सुन्दर फल ये, मन को आकर्षित करते।
पूजा में चढ़ करके ये फल, तन मन को हर्षित करते॥
ऋषभनाथ हे आदि जिनन्दा, तरुवर फल स्वीकार करों।
पूजा का फल मोक्ष महाफल, देकर मम उद्धार करों॥

ॐ ह्रीं परम-शान्ति-विधायकाय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः मोक्षफल-प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

निर्मल नीर सुगन्धित चन्दन, सुन्दर तन्दुल ले आया।
पुष्प दीप नैवेद्य धूप ले, शुभ फल पूजन में लाया॥
हे अनर्घ पद मुक्ति का प्रभु, पाने अर्घ चढ़ाऊँगा।
आदिनाथ की पूजा करके, सारे विघ्न नशाऊँगा॥

ॐ ह्रीं परम-शान्ति-विधायकाय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक अर्घ्य

तैंतीस सागर तक स्वर्गों में, चर्चा में ही लीन रहें।
सिद्ध शिला से थोड़े नीचे, भक्ति में तल्लीन रहें॥
माता मरुदेवी कुक्षी में, दूज बदी आषाढ़ आयें।
नाभिराय के घर आँगन में, रतन बरसते सुख पायें॥

ॐ ह्रीं आषाढ-कृष्ण-द्वितीयायां गर्भ-कल्याणक-प्राप्ताय परम-शान्ति-विधायकाय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी नवमी के शुभ दिन, तीर्थंकर अवतार हुआ।
भोग भूमि में कर्म भूमिसा, अतिशय मय उद्धार हुआ॥

सहस सुवासित कलशो से फिर, पाण्डुक वन अभिषेक हुआ।
अयोध्या की गली गली में, खुशियों का अतिरेक हुआ॥

ॐ ह्रीं चैत्र-कृष्ण-नवम्यां जन्म-कल्याणक-प्राप्ताय परम-शान्ति-विधायकाय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक नृत्य ने आदिश्वर के, जीवन की बदली सब धार।
जगती में कुछ सार नहीं है, ये तो है दु:ख का आगार॥
धन वैभव को छोड़ दिया, और छोड़ चले सारा परिवार।
भीषण वन में शीत उष्ण में, धारा तप बनकर अनगार॥

ॐ ह्रीं चैत्र-कृष्ण-नवम्यां तप-कल्याणक-प्राप्ताय परम-शान्ति-विधायकाय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रंग रंगीला फागुन महीना, उड़ने लागा धर्म गुलाल।
फागुन ग्यारस को मुनिवर ने, प्राप्त किया था केवलज्ञान॥
दिव्य ध्वनि को सुनकर भविजन, हर्षित हो गए सब नर नार।
टूटी नैया पार लगा दो, ओ सृष्टि के तारनहार॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन-कृष्ण-एकादश्यां ज्ञान-कल्याणक-प्राप्ताय परम-शान्ति-विधायकाय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष निकेतन वरन करन को, योग निरोध करे धर ध्यान।
अष्टापद से आदिश्वर ने, पाया था फिर पद निर्वाण॥
निज आतम कल्याण किया और, किया प्रभु ने जग कल्याण।
तृतीय काल में तीन लोक के, अधिनायक बन गये भगवान॥

ॐ ह्रीं माघ-कृष्ण-चतुर्दश्यां मोक्ष-कल्याणक-प्राप्ताय परम-शान्ति-विधायकाय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पांजलि

जिनदेव की पूजा करे, गौवक्त्र यक्ष आयके।
चक्रेश्वरी सेवा करे, नित चित्त को हर्षायके॥
सम्यक्त्व से परिपूर्ण है, गुणशाली देवी-देवता।
विघ्न बाधा दूर हो, हम दे रहे हैं नैवता॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-पादारविन्द-सेवक-गोवक्त्रयक्षाय श्रीजिनमार्गरक्षिकायै: चक्रेश्वर्यै आगत-विघ्न-निवारकाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि)

अष्टदल कमल पूजा प्रारम्भ

सर्वविघ्ननाशक

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम्॥1॥

मणि मुक्ता रत्नों से शोभित, देव झुकाते माथा हैं।
पाप तिमिर में ज्योतित करता, आदि युग के विधाता हैं॥
भव सिन्धु में पतित जनों की, रक्षा करते जिन भगवान।
चरण कमल में सू रीति से, भाव सहित करते परणाम॥1॥

ॐ ह्रीं विश्वविघ्नहराय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सकलरोगनाशक

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूतबुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः।
स्तोत्रै-र्जगत्-त्रितय-चित्त-हरै-रुदारैः,
स्तोष्ये किलाह-मपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥2॥

द्वादशांग के ज्ञान से जन्मी, तेरी स्तुति हुई प्यारी।
शत इन्द्रों की स्तुति ही तो, जग जन के हैं चितहारी॥
भाव भक्ति से विस्मयकारी, स्तुति आदि स्वामी की।
करता हूँ मैं प्रमुदित होकर, तद्भव मुक्तिगामी की॥2॥

ॐ ह्रीं नानामरसंस्तुताय सकलरोगहराय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वसिद्धि दायक

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पाद-पीठ,
स्तोतुं समुद्यत-मति-र्विगत-त्रपोहम्।
बालं विहाय जल-संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्॥3॥

बिना विचारे बालक जल में, छाया चन्द्र को ग्रहण करे।
वैसे जड़ धी बिन लज्जा के, हम तेरा स्तवन करें॥
जिनके पाद पीठ का पूजन, हर्षित होकर देव करें।
उन जिन भगवन के स्तवन को, तत्पर हो स्वयमेव करें॥3॥

ॐ ह्रीं मत्यादिसुज्ञानप्रकाशनाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जलजन्तु-मोचक

वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र! शशाङ्क-कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरु-प्रतिमोपि बुद्ध्या।
कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं,
को वा तरीतु-मल-मम्बु-निधिं भुजाभ्याम्॥4॥

प्रलय काल की तीव्र पवन से, क्रोधित मगरों से भरपूर।
अम्बूनिधि को बाहुबल से, पार करे ना कोई शूर॥
हे गुण सागर! चन्द्रकान्तमय, तेरा रूप है आभावान।
बृहस्पति सम बुद्धिमान भी, कर न सके महिमा का बखान॥4॥

ॐ ह्रीं नानादुःखसमुद्रतारणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षिरोग संहारक

सोहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगत-शक्ति-रपि प्रवृतः।
प्रीत्यात्म-वीर्य-मवि-चार्य मृगी मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निज-शिशोः परि-पाल-नार्थम्॥5॥

स्तुति करने को आया हूँ, हे मुनि! श्रेष्ठ भक्ति से मैं।
हीन बुद्धि पर ध्यान न देना, भक्ति करूँ निज शक्ति से मैं॥
सिंह के सम्मुख शिशु रक्षा हितु, बिना विचारे मृगी जाती।
शक्ति रहित वश प्रेम के होकर, आत्म बली न भय खाती॥5॥

ॐ ह्रीं सकलकार्यसिद्धिकराय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती-भगवती-विद्या प्रसारक

अल्प-श्रुतं श्रुत-वतां परिहास - धाम,
त्वद् भक्ति रेव मुखरी-कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल-मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र-चारु-कलिका-निक-रैक-हेतुः॥6॥

अल्प ज्ञानी मैं विद्वानों के, परिहासों का धाम बना।
तेरी भक्ति बरबस मुझको, करवाती वाचाल पना॥
आम्र मंजरी प्राप्ति हेतु, मधुर-मधुर गुंजन करती।
कोकिल काली कलरव करके, जन मन है रंजन करती॥6॥

ॐ ह्रीं याचितार्थप्रतिपादनशक्तिसहिताय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वदुरित संकट क्षुद्रोपद्रव निवारक

त्वत्-संस्तवेन भव-सन्तति-सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्-क्षय-मुपैति शरीर-भाजाम्।
आक्रान्त-लोक-मलि-नील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु-भिन्न-मिव शार्वर-मन्ध-कारम्॥7॥

तेरी अनुपम स्तुति से ही, खुलते भव बन्धन के पाश।
पलक झपकते ही हो जाता, प्राणी के कर्मों का नाश॥
तीन लोक का गहन तिमिर, जब भ्रमर सरीखा काला हो।
सूर्य किरण के आते ही, ज्यों हो जाता उजियाला हो॥7॥

ॐ ह्रीं सकलपाप फलकुष्टनिवारणाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वारिष्ट योग निवारक

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु,
मुक्ता-फल-द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः॥8॥

ऐसा लखकर नाथ आपकी, भक्ति में विश्वास करूँ।
स्तुति को प्रारंभ करूँ और, सज्जन मन आनन्द भरूँ॥
मतिहीन की तुम प्रभाव से, भक्ति जन की मन।
कमल पत्र पर ओस बूँद ज्यों, मोती जैसी द्युति करती॥8॥

ॐ ह्रीं अनेकसंकटसंसारदुःखनिवारणाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

सुर नर से बन्दित प्रभु, आदिनाथ भगवान।
जल फल से पूजा करूँ, करो मेरा कल्याण॥

ॐ ह्रीं अष्टदल कमलाधिपतये श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षोडशदल कमल पूजा

सप्तभयसंहारक अभीप्सितफलदायक

आस्तां तव स्तवन - मस्त - समस्त - दोषं,
त्वत्-संकथा पि जगतां दुरि-तानि हन्ति।
दूरे सहस्र - किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्मा-करेषु जलजानि विकास-भाञ्जि॥9॥

पावन स्तुति के प्रभाव से, दूर रहे कल्मश राशि।
पुण्य कथा ही पाप नाश में, सक्षम है जो जगवासी॥
नभ में रहता है किरणाकर, स्वयं प्रभा फेंका करता।
परस मात्र से कमल पुष्प ज्यों, प्रमुदित होकर है खिलता॥9॥

ॐ ह्रीं सकलमनोवांछितफलदात्रे क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कूकरविषनिवारक

नात्यद् भुतं भुवन - भूषण भूतनाथ!,
भूतै-र्गुणै-र्भुवि भवन्त-मभिष्टु-वन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्या-श्रितं य इह नात्म समं करोति॥10॥

हे जगभूषण भूतनाथ, ना विस्मय की यह बात रही।
सद्गुण द्वारा तेरी महिमा, भूपर तव सम बना रही॥
निज सम मालिक भृत्य को, करता यदि हुआ सेवक गुणवान।
ना करता निज सम सेवक को, नहीं कहा जाता धनवान॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हज्जिनस्मरणजिनसम्भूताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अभीप्सित-आकर्षक

दृष्ट्वा भवन्त-मनि-मेष-विलोक-नीयं,
नान्यत्र तोष-मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जल-निधे-रसितुं क इच्छेत्॥11॥

अनिमिष दृग कर तुम्हें देखकर, नयनों को बहुतोष हुआ।
मानव को फिर अन्य देव लख, जरा नहीं संतोष हुआ॥
दुग्ध सिन्धु का चन्द्र किरण सम, निर्मल जल जो करता पान।
खारा पानी को पीने की, चाह करेगा कौन पुमान॥11॥

ॐ ह्रीं सकलतुष्टिपुष्टिकराय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हस्ति-मद-विदारक, वांछित-रूप-प्रदायक

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणु-भिस्त्वं,
निर्मापितस् - त्रिभुवनैक - ललामभूत!।
तावन्त एव खलु ते प्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समान-मपरं न हि रूप-मस्ति॥12॥

निर्मल राग रहित अणुओं से, निर्मापित तव देह महान।
त्रिभुवन की सारी सुन्दरता, समा गई है तव तन आन॥
संख्या निश्चित परमाणु की, तव रचनाकर हुई खतम्।
पृथ्वी पर तेरे सम सुन्दर, दिखता ना है कोई रतन॥12॥

ॐ ह्रीं वाञ्छितरूपफलशक्तये क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी-सुख-प्रदायक, स्वशरीररक्षक

वक्त्रं क्व ते सुर-नरो-रग-नेत्र हारि,
नि:शेष-निर्जित-जगत्-त्रितयोप-मानम्।
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशा-करस्य,
यद्-वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम्।।13।।

नर देवों और नागेन्द्रों के, नयनों को हरने वाले।
जीत चुके हो सर्व रूप को, कमल चन्द्र उपमा वाले।।
कहां कलंकी श्यामाकर और, कहां आपका मुखमनहर।
द्युति हीन दिन में हो जाता, ढाक पत्र सम दोषाकर।।13।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीसुखविधायकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आधि-आधि नाशक

सम्पूर्ण-मण्डल-शशाङ्क-कला-कलाप,
शुभ्रा गुणास्-त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास्-त्रिजगदीश्वर नाथ-मेकम्,
कस्तान् निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम्।।14।।

पूर्ण चन्द्र मण्डल सम उज्ज्वल, लंघन करती तीनों लोक।
गुण नायक के आश्रित जो भी, उसको न सकता कोई रोक।।
जगह जगह पर फैल रही है, निर्मल गुण राशि भगवान।
तेरे गुण की स्तुति करता, परगुण ना इतना बलवान।।14।।

ॐ ह्रीं भूतप्रेतादिभयनिवारणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सन्मान-सौभाग्य-संवर्द्धक

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्ग-नाभिर्-
नीतं मना-गपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिता-चलेन,
किं मन्द-राद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्॥15॥

स्वर्ग वधु हर सकी न मन को, किंचित भी विकार नहीं।
इसमें विस्मय का कुछ भी तो, दिखता है आधार नहीं॥
प्रलयकाल की तीव्र पवन से, गिरि शिखर हिल जाता है।
किन्तु तनिक क्या मेरु पर्वत, वायु से हिल पाता है॥15॥

ॐ ह्रीं मेरूवन्मनोबलकरणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व विजयदायक

निर्धूम - वर्तिरपवर्जित - तैल-पूरः,
कृत्स्नं जगत्-त्रय-मिदं प्रकटी-करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिता-चलानांम्,
दीपो परस्तव-मसि नाथ! जगत्-प्रकाशः॥16॥

धूम नहीं न बाती तेल है, फिर भी त्रिभुवन आलोकित।
बुझा सके न तब दीपक को, वायु गिरि जो करे कंपित॥
अपर दीप न तब दीपक सम, रात दिवस जलता रहता।
तेरे दीपक की तुलना ना अन्य दीप है कर सकता॥16॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यलोकवशङ्कराय क्लींमहाबीजारसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वरोग प्रतिरोधक

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहु-गम्यः,
स्पष्टी-करोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भो-धरो-दर-निरुद्ध महा-प्रभावः,
सूर्याति-शायि-महि-मासि मुनीन्द्र! लोके॥17॥

हे मुनिन्द्र! तव महिमा का ना, सूरज हो सकता है अस्त।
तीन लोक आलोकित करता, कर सकता ना राहू ग्रस्त॥
गगन मध्य का सूरज जग में, छिपता उगता दिन प्रतिदिन।
दिव्य दिवाकर आप सूर्य हो, कर न सके कोई छवि हीन॥17॥

ॐ ह्रीं पापान्धकारनिवारणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रुसैन्य स्तम्भक

नित्यो-दयं दलित-मोह-महान्ध-कारं,
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारि-दानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज-मनल्प-कान्ति,
विद्यो-तयज्-जगद पूर्व-शशाङ्क-बिम्बम्॥18॥

नित्य उदयतम मोह के नाशक, राहू के न ग्रास बने।
मेघों से न ढकने वाले, कान्तिमान हो आप्त बने॥
चन्द्र बिम्ब सम शोभित होता, नीलकमल मुख ज्योतिर्मय।
प्रशमाकर योगीश्वर अघहर, अविनश्वर हो तुम अव्यय॥18॥

ॐ ह्रीं चन्द्रवत्सर्वलोकोद्योतनकराय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उच्चाटनादि रोधक

किं शर्वरीषु शशि-नाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्-मुखेन्दु-दलितेषु तमःसु नाथ!।
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके,
कार्यं कियज्-जलधरै-र्जलभार-नम्रैः॥19॥

हे प्रभु तव मुख के सम्मुख तो, अंधकार नश जाता है।
दिन में दिनकर रात कलामुख, जरा काम न आता है॥
धान्य खेत में परिपक्व हो, वायु में लहराता है।
सघन मेघ जल भार से नम्री, काम नहीं कुछ आता है॥19॥

ॐ ह्रीं सकलकालुष्यदोषनिवाराणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सन्तान-सम्पत्ति-सौभाग्य प्रसाधक

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृताव-काशं,
नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काच-शकले किरणा-कुलेपि॥20॥

स्वपर प्रकाशक ज्ञान आपका, जैसा शोभित होता है।
अन्य देव हरिहर आदिक में, ज्ञान श्रेष्ठ ना होता है॥
जैसी महिमा महारतन की, जग में शोभा पाती है।
वैसी महिमा काँचखण्ड की, कभी नहीं हो पाती है॥20॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रकाशितलोकालोकस्वरूपाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वसौख्य सौभाग्य साधक

मन्ये वरं हरि-हरादय एवं दृष्ट्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष-मेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन् मनो हरति नाथ! भवान्तरेपि॥21॥

नाथ मानता हूँ इस जग में, हरिहरादिक देव भले।
जिन्हें देख मन तुझमें रमता, आप विषय संतोष मिले॥
नहीं प्रयोजन अन्य देव से, तुष्ट हुआ मन दर्शनकर।
कोटि जन्म भी आप सिवा ना, मम-मन को सकता है हर॥21॥

ॐ ह्रीं सर्वदोषहरशुभदर्शनाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भूत पिशाचादि बाधा निरोधक

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्व-दुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिम्,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुर-दंशु-जालम्॥22॥

निखिल विश्व की सारी माता, जनती रहती शत संतान।
किन्तु आप सम जनने वाली, दिखती ना है मात महान॥
सर्व दिशाएँ धारण करती, तारागण का उजियाला।
पूर्व दिशा ही जनती रहती, सूर्य सहस्र किरणों वाला॥22॥

ॐ ह्रीं अद्भुतगुणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रेतबाधा निवारक

त्वा मा-मनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्णा-ममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वा-मेव सम्य-गुप-लभ्य जयन्ति मृत्युंम्,
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः॥23॥

तुम्हें मानते मुनिजन हे प्रभु! परम पुरुष और तमनाशी।
सूर्य समा तेजस्वी निर्मल, पाते पद हो अविनाशी॥
तेरे चरण युगल को पाकर, मृत्यु पर जय पाते हैं।
उत्तम यही मोक्ष का मारग, अन्य मार्ग भटकाते हैं॥23॥

ॐ ह्रीं मनोवांछितफलदायकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शिरोरोग शासक

त्वामव्ययं विभु-मचिन्त्य-मसंख्य-माद्यं,
ब्रह्माण- मीश्वर- मनन्त- मनङ्ग- केतुम्।
योगीश्वरं विदित-योग-मनेक-मेकं,
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः॥24॥

संत पुकारें कई नामों से, अविनाशी अव्यय ऋषिराज।
सर्वव्यापी जगदीश्वर ब्रह्मा, संख्यातीत या योगीराज॥
ज्ञान स्वरूपी आदि पुरुष प्रभु, मकरध्वज या गिरामपति।
विदित योग या अमल आत्मा, सत्य परायण सदागति॥24॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रनामाधीश्वराय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

कर्म रिपु को नाशकर, पाया केवलज्ञान।
समवशरण सब छोड़कर, मोक्ष गए भगवान॥
अर्घ लिया करपात्र में, श्रद्धा मन में लाय।
इच्छित फल देना विभु, नमो नमो जिनराय॥

ॐ ह्रीं षोडशदल-कमलाधिपतये श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्विंशतिदल कमल पूजा

दृष्टिदोषनिरोधक

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवन-त्रय-शङ्करत्वात्।
धातासि धीर! शिव-मार्ग-विधे-र्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि॥25॥

देवों द्वारा ज्ञान पूज्य है, अतः बुद्ध कहलाए हो।
त्रिभुवन में सुख शान्ति कर्ता, शंकर नाम को पाए हो॥
मोक्ष मार्ग के निर्देशक हो, जग प्रतिपालक निर्माता।
व्यक्त रूप से पुरुषोत्तम हो, न तेरा जग से नाता॥25॥

ॐ ह्रीं षड्दर्शनपारगंताय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अर्धशिर पीडा विनाशक

तुभ्यं नमस्-त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय।
तुभ्यं नमस्-त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय॥26॥

तीन लोक के दुःखहर्ता प्रभु, नमन् करूँ मैं बारम्बार।
पृथ्वी तल के अमल हो भूषण, नमन् करो मेरा स्वीकार॥
तीन जगत के परमेश्वर हो, स्वीकारो मेरा वन्दन।
भवोदधि के शोषण कर्ता, कोटि कोटि तुमको वन्दन॥26॥

ॐ ह्रीं नानादुःखविलीनाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रून्मूलक

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै-रशेषैस्,
त्वं संश्रितो निरवकाश-तया मुनीश!
दोषै-रुपात्त-विविधाश्रय-जात गर्वै:
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि॥27॥

इसमें विस्मय क्या हो सकता, अच्छे गुण तब बने आधार।
अन्य जगह न जगह मिली तो, हे मुनीष! आए तब द्वार॥
मद से हुए उत्पन्न दोष जो, अन्य जगह आश्रय पाए।
स्वप्नों में भी तेरे अन्दर, दुर्गुण ना ही कभी आए॥27॥

ॐ ह्रीं सकलदोषनिर्मुक्ताय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व मनोरथ प्रपूरक

उच्चै - रशोक - तरु - संश्रित - मुन्मयूख,
माभाति रूप-ममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्-किरण-मस्त-तमो-वितानं,
बिम्बं रवे-रिव पयोधर-पार्श्व-वर्ति॥28॥

उन्नत वृक्ष अशोक खड़ा है, शोक नष्ट करने वाला।
शुचि तन होकर आप विराजे, जो जन मन हरने वाला॥
रवि रश्मि की भाँति ऊपर, रूप छटा सुन्दर लगती।
व्यक्त किरण तम नाशक जैसे, मेघ निकट शोभित होती॥28॥

ॐ ह्रीं अशोकतरूविराजमानय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रपीड़ा विनाशक

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनका-वदातम्।
बिम्बं वियद्-विलस-दंशु-लता-वितानम्,
तुङ्गोयाद्रि-शिर-सीव सहस्र-रश्मेः॥29॥

नाना रत्नों से शोभित है, सुन्दर तेरा सिंहासन।
स्वर्ण कान्तिमय चमचम करता, जिस पर तेरा निर्मल तन॥
उदयाचल पर्वत के ऊपर, किरण केतु शोभित होता।
अपनी किरणों को फैलाकर, सारे जग का तम हरता॥29॥

ॐ ह्रीं मणिमुक्ताखचितसिंहासनप्रतिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रु स्तम्भक

कुन्दा-वदात-चल-चामर-चारु-शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कल-धौत-कान्तम्।
उद्यच्छशांङ्क - शुचि - निर्झर - वारिधार,
मुच्चैस्तटं सुरगिरे-रिव शात-कौम्भम्॥30॥

कुन्द पुष्प की भाँति उज्ज्वल, ढुरते चँवर अति सुन्दर।
स्वर्ण कलेवर सम तव तन तो, शोभा पाता अति मनहर॥
उदित चन्द्र सम निर्मल निर्झर, झर झर झर झर बहती है।
स्वर्ण रचित ऊँचे समान तट, यह अति शोभित होती है॥30॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामरप्रातिहार्ययुक्ताय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

राज्य सम्मानदायक

छत्र-त्रयं तव विभाति शशाङ्क-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानुकर-प्रतापम्।
मुक्ताफल- प्रकर-जाल- विवृद्ध-शोभम्,
प्रख्या-पयत् त्रिजगतः परमेश्वर-त्वम्॥31॥

चन्द्र बिम्ब सम अति मनहर है, मणि मुक्ता से जड़ा हुआ।
सूर्य किरण संताप को रोके, तीन छत्र है लगा हुआ॥
त्रय छत्रों से मस्तक शोभित, त्रिभुवन स्वामी प्रकटाता।
तीन लोक का राज मिले जब, तीन छत्र है लग जाता॥31॥

ॐ ह्रीं क्षत्रत्रयप्रातिहार्ययुक्ताय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

संग्रहणी-संहारक

गम्भीर - तार - रव - पूरित - दिग्विभागस्-
त्रैलोक्य-लोक-शुभ- संगम-भूति-दक्षः।
सद्-धर्मराज-जय- घोषण-घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि-र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी॥32॥

दशों दिशा गंभीर स्वरों में, गुँजित है करने वाली।
तीन लोक के प्राणी मात्र को, शुभ संगत देने वाली॥
जैन धर्म के तीर्थंकर का, करने वाली जय जयकार।
मध्य गगन में दुन्दुभि तेरे, यश का करता शब्द अपार॥32॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्याज्ञाविधायिने क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व ज्वरसंहारक

मन्दार - सुन्दर - नमेरु - सुपारि - जात-
सन्तान-कादि-कुसुमोत्कर-वृष्टि-रुद्धा।
गन्धोद - बिन्दु - शुभ - मन्द - मरुत् - प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा॥33॥

पारिजात संतानक आदि, देव गिराते पुष्प अपार।
मन्दानिल सह गन्धोदक की, मन्द वृष्टि होती सुखकार॥
कल्पवृक्ष फूलों की वर्षा, मानों ऐसे लगती है।
दिव्य वचन प्रभु तेरे जैसे, पँक्तिबद्ध हो गिरती है॥33॥

ॐ ह्रीं समस्तजातिपुष्पवृष्टिप्रातिहार्याय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ संरक्षक

शुम्भत-प्रभा-वलय-भूरि-विभा-विभोस्ते,
लोक-त्रये द्युतिमतां द्युति-माक्षिपन्ती।
प्रोद्यद् - दिवाकर - निरन्तर - भूरि- संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशा-मपि सोम-सौम्याम्॥34॥

जग की सारी वस्तु से भी, अधिक कान्तिमय हो प्रभु आप।
प्रखर सूर्य से भी प्रकाशमय, भामण्डल का जग में ताप॥
फिर भी त्रिभुवन के प्राणी को, संतापित ना करती है।
निशिकर सम सुन्दर होकर भी, द्युति से रैन को जयती है॥34॥

ॐ ह्रीं कोटिभास्करप्रभामंडितभामण्डलप्रातिहार्याय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ईति-भीति-निवारक

स्वर्गा-पवर्ग-गम-मार्ग-विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म-तत्त्व-कथनैक-पटुस्-त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनि-र्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः॥35॥

स्वर्ग मोक्ष का मार्ग बताती, दिव्य ध्वनि तेरी भगवान।
तीन लोक के प्राणी मात्र को, सत्य धर्म का देती ज्ञान॥
जग की सारी भाषाओं में, परिवर्तित हो जाती है।
स्वाभाविक गुण दिव्य ध्वनि की, समझ सभी को आती है॥35॥

ॐ ह्रीं जलधरपटलगर्जितसर्वभाषात्मकयोजनप्रमाण दिव्यध्वनि प्रातिहार्याय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मीदायक

उन्निद्र-हेम नव-पङ्कज-पुञ्ज-कान्ति,
पर्युल्-लसन्-नख-मयूख-शिखाभि-रामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परि-कल्प-यन्ति॥36॥

नाथ आपका चरण जो विकसित, स्वर्ण कमल सम सुन्दर है।
अग्र भाग में सूर्य प्रभा सम, शोभित नख अति मनहर है॥
चरण कमल अनुपम प्रभुवर जी, जहाँ-जहाँ भी रखते हैं।
सुरगण अति सुन्दर कमलों को, वहाँ-वहाँ ही रचते हैं॥36॥

ॐ ह्रीं पादन्यासे पद्मश्रीयुक्ताय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्टता प्रतिरोधक

इत्थं यथा तव विभूति- रभूज्-जिनेन्द्र!
धर्मोप-देशन-विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि।।37।।

धर्म देशना समय में जैसा, था प्रभुवर तेरा वैभव।
अन्य देव हरिहर आदिक में, ना होता वैसा वैभव।।
एक सूर्य के किरण पड़त ही, अंधकार का होता नाश।
नक्षत्रों की काँति से, क्या हो सकता वैसा ही प्रकाश।।37।।

ॐ ह्रीं धर्म्मोपदेशसमये समवसरणादिलक्ष्मीविभूतिविराजमानाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हस्तिमदभंजक तथा वैभववर्धक

श्च्योतन्-मदाविल-विलोल-कपोल-मूल-
मत्त- भ्रमद्- भ्रमर- नाद विवृद्ध-कोपम्।
ऐरावताभ - मिभ - मुद्धत - मापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भव-दाश्रितानाम्।।38।।

युगल गाल के मूल भाग से, झरती है मद जल की धार।
मत्त भ्रमर गुँजन करके तो, गज को करती कुपित अपार।।
ऐरावत क्रोधित होकर के, रूप बनाता अति विकराल।
जो भी तेरे आश्रित रहता, भय भग जाता है तत्काल।।38।।

ॐ ह्रीं हस्त्यादिगर्वदुर्द्धरभयनिवारणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहशक्ति-संहारक

भिन्नेभ-कुम्भ-गल-दुज्ज्वल-शोणि ताक्त,
मुक्ताफल - प्रकर - भूषित - भूमिभागः।
बद्ध-क्रमः क्रम-गतं हरिणा-धिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम-युगा-चल-संश्रितं ते।।39।।

ऐरावत के गण्डस्थल को, चीरा है जिसने कई बार।
रक्तांजित गज मुक्ताओं से, वसुन्धरा का किया श्रृंगार।।
ऐसा पंचानन भी उसका, कुछ भी ना कर सकता है।
चरण कमल गिरि का जो मानव, आश्रय लेकर रहता है।।39।।

ॐ ह्रीं युगादिदेवनामप्रसादात् केशरीभय निवारणाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वाग्नि शामक

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं,
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल-मुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सु-मिव सम्मुख-मापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शम-यत्य-शेषम्।।40।।

प्रलय काल की तीव्र पवन से, प्रेरित अग्नि जलती हो।
निखिल विश्व का भक्षण करने, चिनगारी भी निकलती हो।।
शांत पूर्ण हो जाता तत्क्षण, सम्मुख आता दावानल।
नाम आपका सुमिरन करके, डाले जब निर्मल शुभ जल।।40।।

ॐ ह्रीं संसाराग्नितापनिवारणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंग (सर्प) भय भंजक

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्फण-मापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त-शङ्कस्-
त्वन्नाम-नाग-दमनी-हृदि यस्य पुंसः।।41।।

लाल-लाल दो नेत्र निकाले, कोकिल कण्ठ तुल्य काला।
क्रोधित होकर फण फैलाकर, हो गर वह डसने वाला।।
ऐसे सर्प को निर्भय होकर, पैरों से लंघ जाते हैं।
नाम आपका जो नर हिय में, नाग दमनी रख पाते हैं।।41।।

ॐ ह्रीं त्वन्नामनागदमनीशक्तिसम्पन्नाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

युद्धभय विध्वंसक

वल्गत्तुरङ्ग - गज - गर्जित - भीमनाद-
माजौ बलं बलवता-मपि भूपतीनाम्।
उद्यद्-दिवाकर- मयूख-शिखा-पविद्धं,
त्वत्-कीर्तना-त्तम इवाशु भिदा-मुपैति।।42।।

युद्ध क्षेत्र में गज घोड़ों का, भीषण होता कोलाहल।
राजाओं की सेनाओं का, कितना भी हो जाए बल।।
सब सेनाओं का हो जाता, यशोगान से सत्यानाश।
अंधकार नस जाता जैसे, पा सूरज का दिव्य प्रकाश।।42।।

ॐ ह्रीं संग्राममध्ये क्षेमङ्कराय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व शान्तिदायक

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारि-वाह-
वेगा - वतार - तरणा - तुर - योध - भीमे।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षास्-
त्वत्पाद-पङ्कज-वना-श्रयिणो लभन्ते।।43।।

भालों से काटे गज तन को, रक्त नीर झर-झर बहता।
फिर भी योद्धा इसे पार कर, युद्ध भयानक है करता।।
रण के ऐसे भीषण क्षण में, शत्रु पर जय पाता है।
तेरे चरण कमल वन का जो, जग में आश्रय पाता है।।43।।

ॐ ह्रीं वनगजादिभयनिवारणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वापत्तिविनाशक

अम्भौ-निधौ क्षुभित- भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय- दोल्वण-वाड-वाग्नौ।
रङ्गत्तरङ्ग शिखर-स्थित-यान-पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति।।44।।

नीर निधि में क्षोभित प्राणी, नक्र चक्र है अति विकराल।
बड़वानल जब उठे भयंकर, डगमग करती नौका चाल।।
चपल तंरगों के शिखरों या, भंवर बीच हो जिसका यान।
भय तज कर यात्रा वे करते, जो नर करते तेरा ध्यान।।44।।

ॐ ह्रीं संसाराब्धितारणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय हृदय स्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जलोदरादिरोग एवं सर्वापत्तिहारक

उद्भूत - भीषण - जलोदर - भार - भुग्नाः,
शोच्यां दशा-मुप-गताश्च्युत-जीवि-ताशाः।
त्वत्-पाद-पङ्कज-रजोऽमृत-दिग्ध-देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य-रूपाः॥45॥

महा भयंकर रोग जलोदर, शोचनीय प्राणी की दशा।
अति दया मय हुई अवस्था, छोड़ चुका जीवन आशा॥
ऐसा नर तेरे चरणों की, धूलामृत को लगाता है।
रोग रहित हो कामदेव सा, सुन्दर तन हो जाता है॥45॥

ॐ ह्रीं दाहतापजलोदराष्टसन्निपातादिरोगहराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धन विमोक्षक

आपाद कण्ठ-मुरु-शृङ्खल-वेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्-निगड-कोटि-निघृष्ट-ताङ्गाः।
त्वन्-नाम-मन्त्र-मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति॥46॥

लोहे की बेड़ी से जिसके, सकल अंग हैं बँधे हुए।
बड़ी-बड़ी साँकल से जिसकी, जँघाएँ है छिले हुए॥
ऐसा मानव भी प्रभु तेरे, नाम जाप को जपता है।
बन्धन भय से मुक्त हुआ वह, प्रमुदित होकर भ्रमता है॥46॥

ॐ ह्रीं नानाविधकठिनबन्धनदूरकरणाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अस्त्रशस्त्रादिशक्ति निरोधक

मत्त - द्विपेन्द्र - मृगराज - दवान - लाहि -
संग्राम - वारिधि - महोदर - बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाश-मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमानधीते।।47।।

गज दावानल सर्प जलोदर, सिंह युद्ध या कारागार।
भग जाता क्षण में भय नर का, चाहे वह हो पारावार।।
भीषण से भीषण भय तजकर, सुखपूर्वक वह रहता है।
बुद्धिमान जो निशदिन तेरे, भक्तामर को पढ़ता है।।47।।

ॐ ह्रीं बहुविधिविघ्नविनाशाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व सिद्धि दायक

स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र! गुणै-र्निबद्धां,
भक्त्या मया विविध-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गता-मजस्त्रम्,
तं 'मानतुंग' -मवशा समुपैति लक्ष्मीः।।48।।

हे जिनेन्द्र! तव गुण निकुँज से, गुँथी हुई सुन्दर माला।
अक्षर रूपी कुसुम हैं जिसमें, सुन्दर-सुन्दर रंग वाला।।
जो नर इस स्तुति को अपना, कण्ठा-भरण बनाते हैं।
वे नर मानतुंग सम सुन्दर, मोक्ष लक्ष्मी पाते हैं।।48।।

ॐ ह्रीं सकलकार्यसाधनसमर्थाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

सब विघ्न हरे सब तोष करे संसार तजे शिव सुख पावे।
जो संस्तुति कर्ता श्री को पाता रोग शोक सब नश जाये।।
यह अर्घ लिया है चरण दिया है आदि प्रभु भवपार करो।
श्री मानतुंग संग सोमसेन सह 'सौरभ' का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशंति दल कमलाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि अर्घ

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारिणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ऋजुमदीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमितकुसलाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण-इड्ढिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभयारिणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
45. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
46. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
47. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
48. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसाहूणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

शुभ देश अयोध्या सुन्दर है, जहाँ के नृप नाभि नरेन्दर है।
उनके सुत आदि जिनेन्दर हैं, हम नमते वे तीर्थंकर हैं॥1॥

मन वच तन से शुभ कर्म करें, कृत कारित मोदन मोद भरे।
सब संकट को प्रभु दूर करें, भक्ति पूजा भरपूर करें॥2॥

जब जगति में अवतार लिया, सुर मंगल द्रव्य सजाय लिया।
पाण्डुक वन में अभिषेक किया, सबने वन्दन प्रथमेश किया॥3॥

सुन्दर तन का श्रृंगार किया, कर कंकण कज्जल नेत्र दिया।
मस्तक पर मुकुट सजाया है, श्रद्धा से शीश झुकाया है॥4॥

सज धज कर राज महल आए, सब देख देख कर हर्षाए।
सौधर्म ने ताण्डव नृत्य किया, वन्दनमय शुभ शुभ कृत्य किया॥5॥

हाथी घोड़ा सब वस्त्र दिए, रथ सेना सब चतुरंग किए।
शुभ योग सुभोग सभी देवें, शिशु आदि जिनेश के पद सेवे॥6॥

लाख तिरासी वरष पूर्व, सुख भोगे जगति के अपूर्व।
दो नारी दो पुत्री धारी, शत पुत्र हुयें आज्ञाकारी॥7॥

शुभ वर्ष गाँठ का दिन आया, सौधर्म इन्द्र अति हर्षाया।
नीलांजना ने था नृत्य किया, तत्क्षण आयुक्षय मृत्यु हुआ॥8॥

क्षण भंगुर जग की माया है, पल में विनशी यह काया है।
वैराग्य जगा आदि मन में, जिन दीक्षा ली जाकर वन में॥9॥

तप करते वर्ष हजार गए, सब राग द्वेष विनष्ट भए।
कैवल्य ज्ञान की ज्योति जली, भव्यों को दिव्य ध्वनि मिली॥10॥

शुभ समवशरण सुखदायक है, प्रभु आदि जिनेश्वर ज्ञायक है।
भव्य जीव सब आते हैं, प्रभु वाणी सुन हर्षाते हैं॥11॥

उपदेश सुतत्व प्रकाश हुआ, मुनि श्रावक धर्म विकास हुआ।
दुःखदायक कर्म नशाया है, जो आदिनाथ पथ पाया है॥12॥

सब जगति का उद्धार किया, कैलाशगिरी विहार किया।
शेष अघाति नष्ट किये, श्री आदि जिनेश्वर सिद्ध हुए।।13

जिनदेव कृपा की नजर करो, मम कर्म नाश कर अमर करो।
उत्सव का अवसर आया है, पूजा कर शीश झुकाया है।।14।।

दोहा

भव अर्णव को पार कर, पाया मोक्ष महान।
भक्त सभी नमते तुम्हें, आदि जिनेश महान।।

ॐ ह्रीं मम सर्व कर्म विनाशनाय आगत विघ्न भय निवारणाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदि जिनेशा हरो दुख क्लेशा, चरण नमें हम सुखकारी।
मुनि सौरभ सागर पूजा गाकर, पावे पद प्रभु अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकर पंचकल्याणक संयुक्ताय शिवपदकर्ता भव जल निधि पोत सर्व विघ्न व्याधिहर्ता तव भक्ति प्रसादात् मम सर्व कल्याणमस्तु दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु सद्बुद्धिरस्तु धन धान्य समृद्धिरस्तु सम्यकवृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु विजयोस्तु सर्व रिद्धि-सिद्धि भवतु रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि)

भक्तामर विधान परिसमाप्तः।

णमोकार की मूल ध्वनि तो, ऊँकार कहलाती है।
तीन लोक अरूँ परमेष्ठी का, सच्चा ज्ञान कराती है।।
अधो उर्ध्व अरूँ मध्यलोक तो, अ-उ-म में गर्भित है।
अरिहंतातन आचारज अरू, उपाध्याय मुनि वन्दित है।।

जैनाचार संहिता श्लोक नं. 7

श्री भक्तामर विधान प्रशस्ति

ऋषभदेव की संस्कृति है, महावीर का शासन है।
पुष्पदंत अरु भूतबली का, अद्भुत षटखंडागम है॥१॥

निर्ग्रन्थ परंपरा के पोषक, श्री आदिसागर गुरु महान।
वीतराग पथ के अनुयायी, महावीर कीर्ति विद्वान॥२॥

महा निमित्तक विमल सागर से, मुनि मार्ग बढ़ता जाता।
पुष्पदंत आचार्य हमारे, बाल उम्र दीक्षा दाता॥३॥

सन उन्नीस सौ तिरासी से, कोष्ट बीज बुद्धि देते।
आगम प्रवचन काव्य प्रतिभा, देकर भव नौका खेते॥४॥

युवा तपस्वी धर्म प्रभावक, बाल संघ के नायक हैं।
सर्वतोभद्र विहारी गुरुवर, निज आतम के ज्ञायक है॥५॥

राजस्थान की धरा धाम पर, जिन महिमा विस्तार किया।
सन नब्बे जूना मंदिर में, चोमासा उद्धार किया॥६॥

भक्तामर प्रवचन देकर के, बाल वृद्ध को सिखलाया।
भक्ति पूजा जप तप कर लो, ऐसा अवसर फिर ना आया॥७॥

बाल युवा फिर प्रोढ वृद्ध भी, गुरु चरणों में चित लायें।
बच्चों को कुछ शिक्षा देकर, सौरभ सागर सुख पायें॥८॥

मानतुंग की भक्ति काव्य का, हिंदी में अनुवाद करा।
चंचल मन स्थिर हो जाए, जिनवर से संवाद करा॥९॥

बैठ प्रभु की छत्रछाया में, भक्तामर भाषा लिखता।
काव्य सरस हिंदी में रचकर, रोज सुना आया करता॥१०॥

भक्तामर प्रवचन सुन करके, काव्यधारा प्रकट हुई।
गुरुवर हो या जनमानस हो, पद्य सभी के निकट गई॥११॥

भक्तामर की संस्कृत पूजा, सोमसेन का मुझे मिला।
हिंदी में पूजा रच डाला, भक्तामर का मंत्र लिखा॥१२॥

सहज भाव से पाठ स्तुति, बदल गया विधान में।
सुरमय संगीतों में गाया, बड़ौत नगर चौमास में॥१३॥

आठ मई दो सहस्र आठ सन, अड़तालिस दिन पाठ किया।
कबूल नगर वापस आकर के, उत्सवमय विधान किया॥१४॥

कारागृह में भक्ति रचकर, एक नया इतिहास रचा।
णमोकार के बाद पाठ यह, सबसे ज्यादा कंठ सजा॥१५॥

मानतुंग जी बंधन में रह, वंदन का क्रम खोल दिया।
संकट के क्षण डरो नहीं, प्रभु भक्ति कर यह बोल दिया॥१६॥

सौरभ सागर भक्तामर की, महिमा पाठ रचाता है।
आदिनाथ से मानतुंग तक, सबको शीश झुकाता है॥१७॥

वृषभ देव जिन धर्म प्रणेता, तीर्थंकर हैं प्रथम जिनेश।
अजितनाथ से पारस स्वामी, जैन धर्म पूजित अखिलेश॥
प्रातः उठकर णमोकार जप, चौबीसी वंदन करते।
जैन धर्म में जन्मे बालक, जैनी बनकर ही रहते॥

जैनाचार संहिता श्लोक नं. 3

महिला शिक्षित जिनधर्मी हो, जैनधर्म का फूल खिले।
सहयोगी गर पुरुष बने तो, जैनधर्म अनुकूल फले॥
मातपिता की क्रिया देखकर, बालक भी उस पथ बढ़ता।
बाहर शिक्षा पाकर भी वह, जैन धर्म को ना तजता॥

जैनाचार संहिता श्लोक नं. 20

श्री भक्तामर स्तोत्र (हिन्दी)

पद्यानुवादक : आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

मणि मुक्ता रत्नों से शोभित, देव झुकाते माथा हैं।
पाप तिमिर में ज्योतित करता, आदि युग के विधाता हैं॥
भव सिन्धु में पतित जनों की, रक्षा करते जिन भगवान।
चरण कमल में सू रीति से, भाव सहित करते परणाम॥1॥

द्वादशांग के ज्ञान से जन्मी, तेरी स्तुति हुई प्यारी।
शत इन्द्रों की स्तुति ही तो, जग जन के हैं चितहारी॥
भाव भक्ति से विस्मयकारी, स्तुति आदि स्वामी की।
करता हूँ मैं प्रमुदित होकर, तद्भव मुक्तिगामी की॥2॥

बिना विचारे बालक जल में, छाया चन्द्र को ग्रहण करे।
वैसे जड़ धी बिन लज्जा के, हम तेरा स्तवन करें॥
जिनके पाद पीठ का पूजन, हर्षित होकर देव करें।
उन जिन भगवन के स्तवन को, तत्पर हो स्वयमेव करें॥3॥

प्रलय काल की तीव्र पवन से, क्रोधित मगरों से भरपूर।
अम्बूनिधि को बाहुबल से, पार करे ना कोई शूर॥
हे गुण सागर! चन्द्रकान्तमय, तेरा रूप है आभावान।
बृहस्पति सम बुद्धिमान भी, कर न सके महिमा का बखान॥4॥

स्तुति करने को आया हूँ, हे मुनि! श्रेष्ठ भक्ति से मैं।
हीन बुद्धि पर ध्यान न देना, भक्ति करूँ निज शक्ति से मैं॥
सिंह के सम्मुख शिशु रक्षा हितु, बिना विचारे मृगी जाती।
शक्ति रहित वश प्रेम के होकर, आत्म बली न भय खाती॥5॥

अल्प ज्ञानी मैं विद्वानों के, परिहासों का धाम बना।
तेरी भक्ति बरबस मुझको, करवाती वाचाल पना॥
आम्र मंजरी प्राप्ति हेतु, मधुर-मधुर गुँजन करती।
कोकिल काली कलरव करके, जन मन है रंजन करती॥6॥

तेरी अनुपम स्तुति से ही, खुलते भव बन्धन के पाश।
पलक झपकते ही हो जाता, प्राणी के कर्मों का नाश॥
तीन लोक का गहन तिमिर जब, भ्रमर सरीखा काला हो।
सूर्य किरण के आते ही ज्यों, हो जाता उजियाला हो॥7॥

ऐसा लखकर नाथ आपकी, भक्ति में विश्वास करूँ।
स्तुति को प्रारंभ करूँ और, सज्जन मन आनन्द भरुँ।
मतिहीन की तुम प्रभाव से, भक्ति जन की मन हरती।
कमल पत्र पर ओस बूँद ज्यों, मोती जैसी द्युति करती॥8॥

पावन स्तुति के प्रभाव से, दूर रहे कल्मश राशि।
पुण्य कथा ही पाप नाश में, सक्षम है जो जगवासी॥
नभ में रहता है किरणाकर, स्वयं प्रभा फेंका करता।
परस मात्र से कमल पुष्प ज्यों, प्रमुदित होकर है खिलता॥9॥

हे जगभूषण भूतनाथ ना, विस्मय की यह बात रही।
सद्‌गुण द्वारा तेरी महिमा, भूपर तव सम बना रही।
निज सम मालिक भृत्य को करता, यदि हुआ सेवक गुणवान।
ना करता निज सम सेवक को, नहीं कहा जाता धनवान॥10॥

अनिमिष दृग कर तुम्हें देखकर, नयनों को बहुतोष हुआ।
मानव को फिर अन्य देव लख, जरा नहीं संतोष हुआ।
दुग्ध सिन्धु का चन्द्र किरण सम, निर्मल जल जो करता पान।
खारा पानी को पीने की, चाह करेगा कौन पुमान॥11॥

निर्मल राग रहित अणुओं से, निर्मापित तव देह महान।
त्रिभुवन की सारी सुन्दरता, समा गई है तव तन आन॥
संख्या निश्चित परमाणु की, तव रचनाकर हुई खतम्।
पृथ्वी पर तेरे सम सुन्दर, दिखता ना है कोई रतन॥12॥

नर देवों और नागेन्द्रों के, नयनों को हरने वाले।
जीत चुके हो सर्व रूप को, कमल चन्द्र उपमा वाले॥
कहाँ कलंकी श्यामाकर और, कहाँ आपका मुखमनहर।
द्युति हीन दिन में हो जाता, ढाक पत्र सम दोषाकर॥13॥

पूर्ण चन्द्र मण्डल सम उज्ज्वल, लंघन करती तीनों लोक।
गुण नायक के आश्रित जो भी, उसको न सकता कोई रोक॥
जगह जगह पर फैल रही है, निर्मल गुण राशि भगवान।
तेरे गुण की स्तुति करता, परगुण ना इतना बलवान॥14॥

स्वर्ग वधु हर सकी न मन को, किंचित भी विकार नहीं।
इसमें विस्मय का कुछ भी तो, दिखता है आधार नहीं॥
प्रलयकाल की तीव्र पवन से, गिरि शिखर हिल जाता है।
किन्तु तनिक क्या मेरु पर्वत, वायु से हिल पाता है॥15॥

धूम नहीं न बाती तेल है, फिर भी त्रिभुवन आलोकित।
बुझा सके न तव दीपक को, वायु गिरि जो करे कंपित॥
अपर दीप न तव दीपक सम, रात दिवस जलता रहता।
तेरे दीपक की तुलना ना, अन्य दीप है कर सकता॥16॥

हे मुनिन्द्र! तव महिमा का ना, सूरज हो सकता है अस्त।
तीन लोक आलोकित करता, कर सकता ना राहू ग्रस्त॥
गगन मध्य का सूरज जग में, छिपता उगता दिन प्रतिदिन।
दिव्य दिवाकर आप सूर्य हो, कर न सके कोई छवि हीन॥17॥

नित्य उदयतम मोह के नाशक, राहू के न ग्रास बने।
मेघों से न ढकने वाले, कान्तिमान हो आप्त बने॥
चन्द्र बिम्ब सम शोभित होता, नीलकमल मुख ज्योतिर्मय।
प्रशमाकर योगीश्वर अघहर, अविनश्वर हो तुम अव्यय॥18॥

हे प्रभु तव मुख के सम्मुख तो, अंधकार नश जाता है।
दिन में दिनकर रात कलामुख, जरा काम न आता है॥
धान्य खेत में परिपक्व हो, वायु में लहराता है।
सघन मेघ जल भार से नम्री, काम नहीं कुछ आताहै॥19॥

स्वपर प्रकाशक ज्ञान आपका, जैसा शोभित होता है।
अन्य देव हरिहर आदिक में, ज्ञान श्रेष्ठ ना होता है॥
जैसी महिमा महारतन की, जग में शोभा पाती है।
वैसी महिमा काँचखण्ड की, कभी नहीं हो पाती है॥20॥

नाथ मानता हूँ इस जग में, हरिहरादिक देव भले।
जिन्हें देख मन तुझमें रमता, आप विषय संतोष मिले॥
नहीं प्रयोजन अन्य देव से, तुष्ट हुआ मन दर्शनकर।
कोटि जन्म भी आप सिवा ना, मम-मन को सकता है हर॥21॥

निखिल विश्व की सारी माता, जनती रहती शत संतान।
किन्तु आप सम जनने वाली, दिखती ना है मात महान॥
सर्व दिशाएँ धारण करती, तारागण का उजियाला।
पूर्व दिशा ही जनती रहती, सूर्य सहस्र किरणों वाला॥22॥

तुम्हें मानते मुनिजन हे प्रभु! परम पुरुष और तमनाशी।
सूर्य समा तेजस्वी निर्मल, पाते पद हो अविनाशी॥
तेरे चरण युगल को पाकर, मृत्यु पर जय पाते हैं।
उत्तम यही मोक्ष का मारग, अन्य मार्ग भटकाते हैं॥23॥

संत पुकारें कई नामों से, अविनाशी अव्यय ऋषिराज।
सर्वव्यापी जगदीश्वर ब्रह्मा, संख्यातीत या योगीराज॥
ज्ञान स्वरूपी आदि पुरुष प्रभु, मकरध्वज या गिरामपति।
विदित योग या अमल आत्मा, सत्य परायण सदागति॥24॥

देवों द्वारा ज्ञान पूज्य है, अतः बुद्ध कहलाए हो।
त्रिभुवन में सुख शान्ति कर्ता, शंकर नाम को पाए हो॥
मोक्ष मार्ग के निर्देशक हो, जग प्रतिपालक निर्माता।
व्यक्त रूप से पुरुषोत्तम हो, न तेरा जग से नाता॥25॥

तीन लोक के दुःखहर्ता प्रभु, नमन् करूँ मैं बारम्बार।
पृथ्वी तल के अमल हो भूषण, नमन् करो मेरा स्वीकार॥
तीन जगत के परमेश्वर हो, स्वीकारो मेरा वन्दन।
भवोदधि के शोषण कर्ता, कोटि कोटि तुमको वन्दन॥26॥

इसमें विस्मय क्या हो सकता, अच्छे गुण तब बने आधार।
अन्य जगह न जगह मिली तो, हे मुनीष! आए तब द्वार॥
मद से हुए उत्पन्न दोष जो, अन्य जगह आश्रय पाए।
स्वप्नों में भी तेरे अन्दर, दुर्गुण ना ही कभी आए॥27॥

उन्नत वृक्ष अशोक खड़ा है, शोक नष्ट करने वाला।
शुचि तन होकर आप विराजे, जो जन मन हरने वाला॥
रवि रश्मि की भाँति ऊपर, रूप छटा सुन्दर लगती।
व्यक्त किरण तम नाशक जैसे, मेघ निकट शोभित होती॥28॥

नाना रत्नों से शोभित है, सुन्दर तेरा सिंहासन।
स्वर्ण कान्तिमय चमचम करता, जिस पर तेरा निर्मल तन॥
उदयाचल पर्वत के ऊपर, किरण केतु शोभित होता।
अपनी किरणों को फैलाकर, सारे जग का तम हरता॥29॥

कुन्द पुष्प की भाँति उज्ज्वल, ढुरते चँवर अति सुन्दर।
स्वर्ण कलेवर सम तव तन तो, शोभा पाता अति मनहर॥
उदित चन्द्र सम निर्मल निर्झर, झर झर झर झर बहती है।
स्वर्ण रचित ऊँचे समान तट, यह अति शोभित होती है॥30॥

चन्द्र बिम्ब सम अति मनहर है, मणि मुक्ता से जड़ा हुआ।
सूर्य किरण संताप को रोके, तीन छत्र है लगा हुआ।।
त्रय छत्रों से मस्तक शोभित, त्रिभुवन स्वामी प्रकटाता।
तीन लोक का राज मिले जब, तीन छत्र है लग जाता।।31।।

दशों दिशा गंभीर स्वरों में, गुँजित है करने वाली।
तीन लोक के प्राणी मात्र को, शुभ संगत देने वाली।।
जैन धर्म के तीर्थंकर का, करने वाली जय जयकार।
मध्य गगन में दुन्दुभि तेरे, यश का करता शब्द अपार।।32।।

पारिजात संतानक आदि, देव गिराते पुष्प अपार।
मन्दानिल सह गन्धोदक की, मन्द वृष्टि होती सुखकार।।
कल्पवृक्ष फूलों की वर्षा, मानों ऐसे लगती है।
दिव्य वचन प्रभु तेरे जैसे, पँक्तिबद्ध हो गिरती है।।33।।

जग की सारी वस्तु से भी, अधिक कान्तिमय हो प्रभु आप।
प्रखर सूर्य से भी प्रकाशमय, भामण्डल का जग में ताप।।
फिर भी त्रिभुवन के प्राणी को, संतापित ना करती है।
निशिकर सम सुन्दर होकर भी, द्युति से रैन को जयती है।।34।।

स्वर्ग मोक्ष का मार्ग बताती, दिव्य ध्वनि तेरी भगवान।
तीन लोक के प्राणी मात्र को, सत्य धर्म का देती ज्ञान।।
जग की सारी भाषाओं में, परिवर्तित हो जाती है।
स्वाभाविक गुण दिव्य ध्वनि की, समझ सभी को आती है।।35।।

नाथ आपका चरण जो विकसित, स्वर्ण कमल सम सुन्दर है।
अग्र भाग में सूर्य प्रभा सम, शोभित नख अति मनहर है।।
चरण कमल अनुपम प्रभुवर जी, जहाँ-जहाँ भी रखते हैं।
सुरगण अति सुन्दर कमलों को, वहाँ-वहाँ ही रचते हैं।।36।।

धर्म देशना समय में जैसा, था प्रभुवर तेरा वैभव।
अन्य देव हरिहर आदिक में, ना होता वैसा वैभव॥
एक सूर्य के किरण पड़त ही, अंधकार का होता नाश।
नक्षत्रों की काँति से, क्या हो सकता वैसा ही प्रकाश॥37॥

युगल गाल के मूल भाग से, झरती है मद जल की धार।
मत्त भ्रमर गुँजन करके तो, गज को करती कुपित अपार॥
ऐरावत क्रोधित होकर के, रूप बनाता अति विकराल।
जो भी तेरे आश्रित रहता, भय भग जाता है तत्काल॥38॥

ऐरावत के गण्डस्थल को, चीरा है जिसने कई बार।
रक्तांजित गज मुक्ताओं से, वसुन्धरा का किया श्रृंगार॥
ऐसा पंचानन भी उसका, कुछ भी ना कर सकता है।
चरण कमल गिरि का जो मानव, आश्रय लेकर रहता है॥39॥

प्रलय काल की तीव्र पवन से, प्रेरित अग्नि जलती हो।
निखिल विश्व का भक्षण करने, चिनगारी भी निकलती हो॥
शांत पूर्ण हो जाता तत्क्षण, सम्मुख आता दावानल।
नाम आपका सुमिरन करके, डाले जब निर्मल शुभ जल॥40॥

लाल-लाल दो नेत्र निकाले, कोकिल कण्ठ तुल्य काला।
क्रोधित होकर फण फैलाकर, हो गर वह डसने वाला॥
ऐसे सर्प को निर्भय होकर, पैरों से लंघ जाते हैं।
नाम आपका जो नर हिय में, नाग दमनी रख पाते हैं॥41॥

युद्ध क्षेत्र में गज घोड़ों का, भीषण होता कोलाहल।
राजाओं की सेनाओं का, कितना भी हो जाए बल॥
सब सेनाओं का हो जाता, यशोगान से सत्यानाश।
अंधकार नस जाता जैसे, पा सूरज का दिव्य प्रकाश॥42॥

भालों से काटे गज तन को, रक्त नीर झर-झर बहता।
फिर भी योद्धा इसे पार कर, युद्ध भयानक है करता॥
रण के ऐसे भीषण क्षण में, शत्रु पर जय पाता है।
तेरे चरण कमल वन का जो, जग में आश्रय पाता है॥43॥

नीर निधि में क्षोभित प्राणी, नक्र चक्र है अति विकराल।
बड़वानल जब उठे भयंकर, डगमग करती नौका चाल॥
चपल तंरगों के शिखरों या, भंवर बीच हो जिसका यान।
भय तज कर यात्रा वे करते, जो नर करते तेरा ध्यान॥44॥

महा भयंकर रोग जलोदर, शोचनीय प्राणी की दशा।
अति दयामय हुई अवस्था, छोड़ चुका जीवन आशा॥
ऐसा नर तेरे चरणों की, धूलामृत को लगाता है।
रोग रहित हो कामदेव सा, सुन्दर तन हो जाता है॥45॥

लोहे की बेड़ी से जिसके, सकल अंग हैं बँधे हुए।
बड़ी-बड़ी सांकल से जिसकी, जघाएँ है छिले हुए॥
ऐसा मानव भी प्रभु तेरे, नाम जाप को जपता है।
बन्धन भय से मुक्त हुआ वह, प्रमुदित होकर भ्रमता है॥46॥

गज दावानल सर्प जलोदर, सिंह युद्ध या कारागार।
भग जाता क्षण में भय नर का, चाहे वह हो पारावार॥
भीषण से भीषण भय तजकर, सुखपूर्वक वह रहता है।
बुद्धिमान जो निशदिन तेरे, भक्तामर को पढ़ता है॥47॥

हे जिनेन्द्र! तव गुण निकुँज से, गुँथी हुई सुन्दर माला।
अक्षर रूपी कुसुम हैं जिसमें, सुन्दर-सुन्दर रंग वाला॥
जो नर इस स्तुति को अपना, कण्ठा-भरण बनाते हैं।
वे नर मानतुंग सम सुन्दर, मोक्ष लक्ष्मी पाते हैं॥48॥

दोहा - आदिनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
'सौरभ सागर' नत हुआ, गा गा मंगलाचार॥

श्री लघु चौबीसी पूजन (विधान)

स्थापना

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमतिनाथ स्वामी गुणखान।
पद्म सुपारस चन्दा प्रभु जी, पुष्पदन्त जिन कर लूँ ध्यान॥
हे शीतल प्रभु शीतल करदो, श्रेयनाथ जिन हृदय विशाल।
वासुपूज्य पद बाल ब्रह्म हैं, विमल अनन्त धरम जयमाल॥
शान्ति कुन्थु अर मल्लि जिनेश्वर, मुनिसुव्रत व्रत पाऊँगा।
नमिनाथ नम नेमि शरण पा, पारस वीर को ध्याऊँगा॥
चौबीसों जिनराज हमारे, आज पुकारूँ करुणा धार।
अत्र पधारो हृदय विराजो, कर्म खपाओ हे अविकार॥
तीर्थंकर हे धर्म शिरोमणि, कर्म नाश भव पार करो।
भक्ति भाव से पूजा करता, मम विनती स्वीकार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

जग की ज्वाला में जल जल कर, जीवन व्यर्थ गवाया है।
जल की धारा चरण कमल दें, जन्म जरा विनशाया है॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जलधारा स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

चन्दन चुटकी ले आया प्रभु, वन्दन भाव जगा करके।
शीतल सुरभित मन हो जाए, पूजा पाठ रचा करके॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, चन्दन यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

उज्ज्वल तन्दुल भाव मृदुल कर, श्री जिन सम्मुख ले आऊँ।
अक्षय निधी अक्षय संयम धर, सिद्धालय को पा जाऊँ॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, अक्षत यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अक्षय-पदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

हृदय कमल कोमल करुणामय, काम बाण से रहित करो।
इन्द्रिय भोग तजूँ मैं जिनवर, ब्रह्मभाव को उदित करो॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, पुष्पाञ्जलि स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

इच्छाओं को दूर भगाया, नित उपवास किया करते।
क्षुधा वेदिनी नाश करन को, अन्नपान तजा करते॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, नैवेद्यम् स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्यातम में फँसा रहा पर, अन्तर दीप न जल पाया।
तेरी अनुपम दिव्य ज्योति से, अन्तर मन उज्ज्वल छाया॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जगमग दीप स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

दीक्षा लेकर महा तपस्या, करते चौबीसों मुनिराज।
योग साधना निजानन्दमय, अद्‌भुत अनुभूति निजसाध॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, धूपं यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

तरुवर फल तन पुष्ट करावें, बाहर बढ़ता फलता है।
अन्तर मन का मोक्ष महाफल, भक्ति ध्यान से मिलता है॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, श्रद्धा फल स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्ष-महाफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया॥
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक

(चौपाई)

सोलह कारण भावना भाई, दया धर्म मन में प्रकटाई।
सोलह स्वप्न शगुन दर्शाता, पन्द्रह माह रतन बरसाता॥

तीर्थंकर का एक ही क्रम है, नाहीं संशय ना विभ्रम है।
गर्भ विषे जो जीव पला है, तीर्थंकर जग जीव भला है॥1॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो गर्भ-मंगल-मण्डिताय मम-गर्भ-दोष-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट देवीयाँ मंगल गाये, माता की सेवा चित लाये।
जन्म हुआ प्रभु का धरती पर, सुख शान्ति त्रय लोक में क्षणभर॥
देव इन्द्र सौधर्म भी आये, पाण्डुक वन अभिषेक कराये।
चिह्न लखा अरुँ नाम पुकारा, जन्म कल्याणक अति सुख कारा॥2॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जन्ममंगल-मण्डिताय मम-जन्मरोग-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगति के इन्द्रिय सुखभोगे, राज काज सब नित अवलोके।
पूर्व जन्म की यादें आई, या घटना ने भाव जगाई॥
लौकान्तिक सब देव भी आए, मनहर शिविका में बिठलाएँ।
छोड़ दिया नश्वर संसारा, भेष दिगम्बर अनुपम धारा॥3॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो तपोमंगल-मण्डिताय मम-चारित्र-वर्धनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षों जंगल में तप कीना, कभी कभी आहार है लीना।
धर्म गृहस्थी या संन्यासी, पथ दोनों दे तप अभ्यासी॥
पद्मासन खड्गासन रहते, परिषहों को हर क्षण सहते।
शुक्ल ध्यान चउ कर्म नशाया, केवलज्ञान कल्याण मनाया॥4॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो केवलज्ञान-मण्डिताय मम-कुज्ञान-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय योगों से मुक्त हुए हो, ध्यान अवस्था युक्त हुए हो।
सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति ध्याना, व्युपरत किरिया अरि सब हाना॥
अ-इ-उ-ऋ-लृ लघु शब्दा, कर्म जला तत्क्षण प्रभु सिद्धा।
निराकार चैतन्य प्रकाशी, चरण नमें पाने सुख राशि॥5॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्षमंगल-मण्डिताय मम-सर्व-कर्म विध्वंसनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घावली

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

आदिनाथ प्रथमेश जिन, धर्म कर्म दातार।
भव वारिधी से पार कर, मेटो मम संसार॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मधुरा धारी प्रभु, धर्म बढ़ावें रोज।
अजितनाथ भगवान के बन्दूँ चरण सरोज॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवनाथ भगवान का अर्घ्य

संभव सम भव अन्त हो, पाऊँ सिद्ध स्वभाव।
भावों में समभाव हो, तजूँ विकारी भाव॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनन्दननाथ भगवान का अर्घ्य

अभिनन्दन वन्दन करूँ, क्रन्दन कर्म नशाय।
जग बन्धन को तोड़कर, सिद्धालय को पाय॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ भगवान का अर्घ्य

मिथ्यावाद को दूर कर, स्याद्वाद प्रगटाय।
दुर्बुद्धि दुर्ध्यान तज, सुमतिनाथ शिर नाय॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ भगवान का अर्घ्य

पद्मासन बैठे प्रभू, आतम पद्म खिलाय।
पद्म खिले निज ध्यान का, पद्म प्रभु सिर नाय॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

वीतराग निज ज्ञान में, झलके तीनों लोक।
तत्व प्रकाशक महामुनि, चरण सुपारस धोक।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु भगवान का अर्घ्य

अखिलेश्वर हे महाव्रती, तीर्थ प्रवर्तक आप।
धवल वर्ण तन आत्मा, चन्द्र प्रभु निष्पाप।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदन्त भगवान का अर्घ्य

भव भंजक भगवान हैं, पुष्पदंत शुभ नाम।
मगर चिह्न तन श्वेत है, शत शत करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मामृत का दान दे, शीतल शिवपद पाय।
मम आतम शीतल करे, छोड़े विषय कषाय।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान का अर्घ्य

जय जय श्रेयांशम तव गुण पासं, कर्म विनाशं भक्ति करम्।
पावन पद बन्दों जय जिन चन्दों, कृपा करिंदो शान्ति प्रदम्।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

पाँचों कल्याणक महा, चम्पापुर में पाय।
बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराय।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ भगवान का अर्घ्य

बाहर भीतर स्वच्छता, विमल अमल गुणवन्त।
अर्घ चढ़ाकर पूजता, पाने पद अरहन्त।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथ भगवान का अर्घ्य

सुख अनन्त पाया प्रभु, कर कर कर्मन अन्त।
अर्घ चढ़ा वन्दन करूँ, अनन्तनाथ भगवन्त॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ भगवान का अर्घ्य

ध्वनि सुनि ध्रुवधाम की, धैर्य धर्म प्रगटाय।
ध्याता बन निज ध्येय को, धर्मनाथ सम ध्याय॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

जय त्रिभुवन नायक आतम ज्ञायक, कर्म विनाशक शान्ति नमो।
जय शिवपुरवासी ज्ञान प्रकाशी, धर्म विकासी शान्ति नमों॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ भगवान का अर्घ्य

कर्म जहर निज आत्मा, मरण देय भटकाय।
भक्ति कुन्थुनाथ की, सर्व जहर विनशाय॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ भगवान का अर्घ्य

दर्पण में मुख रूप लख, भूला आत्म स्वरूप।
अरहनाथ सर्व दर्प हर, पाया चिन्मय रूप॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ भगवान का अर्घ्य

हे लेश्या तीता भव्या मीता, परम पुनीता मल्लि जिनेश।
जय आत्म विहारी बाल ब्रह्मचारी, आरती उतारी भक्ति विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अर्घ्य

शत इन्द्रों ने भक्ति कर, नाशा भव भटकाव।
मुनिसुव्रत की अर्चना, देवे निज स्वभाव।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथ भगवान का अर्घ्य

नमिनाथ नमता रहूँ, नम्र भाव मन धार।
अहंकार सब मेट कर, धारूँ शुद्ध विचार॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

पशु बन्धन को देखकर, धार लिया वैराग्य।
सर्वदर्शी नेमी प्रभु, नमन जगावे भाग्य।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

क्षायिक नव लब्धि महा, योग निरोध कर पाय।
पार्श्व प्रभु की वन्दना, पाऊँ निज स्वभाव।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ्य

शासन नायक वीर जिन, अनेकान्त सरताज।
समवशरण सन्देश दे, पाया मुक्ति राज।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी का अर्घ्य

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरुवर पावन दीप धूप वन्दन भाया।।
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्री मंशापूर्ण महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

आदि जिनेश्वर जग हितकारी, अजित नाथ जित कर्म विकारी।
संभव भव का नाश किया है, अभिनन्दन जग जान लिया है॥
सुमतिनाथ सन्मार्ग प्रदाता, पद्म प्रभु जी जग विख्याता।
नाथ सुपारस जय हो तेरी, चन्द्रप्रभु काटो भव फेरी॥
पुष्पदन्त श्री जिनवर नामा, शीतल शीतलता ध्रुव धामा।
श्रेयनाथ गुण दया निधाना, वासुपूज्य पूजित अविरामा॥
विमलनाथ निर्मलता धारी, है अनन्त अक्षय सुखकारी।
धर्मनाथ जिन धर्म बढ़ावें, शान्तिनाथ मन शान्त करावें॥
कुन्थुनाथ जी काम विजेता, अरहनाथ त्रिपद के नेता।
मल्लिनाथ सब शल्य मिटावें, मुनिसुव्रत व्रत में तिष्ठावें॥
नमिनाथ को नमन हमारी, नेमिनाथ दुख संकटहारी।
पारसनाथ सदा ही ध्याऊँ, महावीर पद शीश नवाऊँ॥

दोहा

चौबीसों के चरण में, वन्दन बारम्बार।
"सौरभ सागर" नित नमें, भक्तिभाव उरधार॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूणार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं वृषभादि वीराय नमः।

त्रिकाल चौबीसी प्रत्येक अर्घ

त्रिकालिक प्रथम तीर्थंकर

धर्म प्रवर्तक आदिनाथ जी, चिन्मय मूरत प्रथम जिनेश।
तीर्थंकर निर्वाण भूत के, प्रारंभिक ज्ञायक अखिलेश॥
आने वाले महापद्म जी, धर्म ध्वजा फहरायेगें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, प्रथम तीर्थंकर ध्यायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ निर्वाण महापद्म त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक द्वितीय तीर्थंकर

कर्म विजेता अजितनाथ जी, गज चिन्हाकिंत द्वितीय जिनेश।
सागर से गंभीर भूत के, तीर्थंकर है अपर महेश।।
नर सुर सेवित भावी जिनवर, श्री सुरदेव सदा सुखकार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर जय जयकार।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ, श्री सागर, श्री सुरदेव त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तृतीय तीर्थंकर

जग में संभव सब कुछ है जब, संभवनाथ कृपा बरसे।
महासाधु सा जीवन जीकर, ध्यान मग्न जीवन हरसे।।
आने वाले तीर्थंकर श्री, सुपार्श्वनाथ[1] कल्याण करें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर ध्यान धरें।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ, महासाधु, सुपार्श्वनाथ त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चतुर्थ तीर्थंकर

मन मर्कट सा मचल रहा हो, अभिनंदन का जाप करें।
विमलप्रभ सा निर्मल मन कर, जीवन के संताप हरें।।
तीर्थंकर श्री स्वयंप्रभ सम, स्वयं प्रभा प्रगटाऊंगा।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर गुण गाऊंगा।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन, विमलप्रभ, श्री स्वयं प्रभ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकर:**–तृतीय तीर्थंकर का सुरिप्रभ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक पंचम तीर्थंकर

सुमतिनाथ मति पाने को मन, सुमन सुमन ले नमन किया।
श्री श्रीधर[1] सम शुद्ध आत्म कर, सिद्धालय में गमन किया॥
सर्वात्मभूत जिन देव पांचवे, होने वाले तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूँ तीनों तीर्थंकर॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ, श्रीधर, सर्वात्मभूत तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक षष्टम तीर्थंकर

खिला कमल सा चिन्ह आपका, पद्मप्रभु पावन भगवान।
सुदत्तनाथ के समवशरण में, दिव्य ध्वनि खिरती अविराम॥
तीर्थंकर श्री देवपुत्र[2] जी, होवेंगें पुण्यार्थ नमूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक सदा नमूं॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु, सुदत्तनाथ, देवपुत्र तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक सप्तम तीर्थंकर

स्वयं बोध स्वास्तिक से होता, नाथ सुपार्श्व का लांक्षन है।
कर्म रहित श्री अमलप्रभ[3] जी, सिद्धालय सुख हर क्षण हैं॥
कुल कीर्ति को बर्धित करने, वाले हैं कुलपुत्र[4] मुनि।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक त्रयों मुनि॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ, अमलप्रभ, कुलपुत्र नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–पंचम तीर्थंकर सर्वदुध नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–षष्टम तीर्थंकर जयदेव जी नाम का भी उल्लेख है।
3. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–सप्तम तीर्थंकर का सदल नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–सप्तम तीर्थंकर का उदयदेव जी का भी उल्लेख है।
   भूतकालीन तीर्थंकरः–नवम तीर्थंकर का आडिट नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक अष्टम तीर्थंकर

चंद्रमणि सम चंद्रकांति मय, चंद्रप्रभु जिनराज महान।
उद्धर जिन उद्धार कराते, सिद्धालय में ज्योतिर्मान।।
उदंकनाथ भावी तीर्थंकर, चरण वंदना नित्य करूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर का ध्यान करूं।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभु, उद्धर जिन, उदंक देव तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक नवम् तीर्थंकर

भव भय भंजक पुष्पदंत प्रभु, भवोदधि के तारणहार।
भूतकाल के अंगिर जिनवर, पूजूं कर्मन नाशन हार।।
प्रोष्ठिल[1] है भावी तीर्थंकर, पायेंगे आगे निर्वाण।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर पूजूँ धर ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त, अंगिर, प्रोष्ठिल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक दशम तीर्थंकर

सुखदायक कल्याणक पाया, शीतल स्वामी तप करके।
भूतकाल के सन्मति देवा[2], सद्गति देवे भव हरके।।
जयकीर्ति जिनधर्म बढ़ाने, होंगे दशवें तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूं कर्म रहित जिनवर।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ, सन्मति देव, जयकीर्ति तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–नवम तीर्थंकर का प्रश्नकीर्ति जी का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–दशम तीर्थंकर का अग्निनाथ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक ग्यारहवें तीर्थंकर

घाति कर्म विनाशक जिनवर, नाम श्रेयांश है मंगलकार।
सिंधु[1] जिनवर बंदू अघहर, भव ध्वंसि गुण अपरंपार।।
पूर्ण बुद्ध हो मुनिसुव्रत[2] जी, नामधारी भावी जिनराज।
भूत भविष्यत वर्तमान जिन, पूजू निजानंद ध्रुवराज।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांश नाथ, सिंधुनाथ, मुनिसुव्रत नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बारहवें तीर्थंकर

वासुपूज्य ब्रह्मचारी जिनवर, सिद्धालय में रहे विराज।
कुसुमांजलि तीर्थंकर पूजूँ, भूतकाल के हे जिनराज।।
निष्कामी अर[3] अमल जिनेश्वर, नित्य सुखाश्रित बसते है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक कहते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, कुसुमंजलि, अरनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तेरहवें तीर्थंकर

विमल भाव ले विमलनाथ के, विमल गुणों का गान करें।
शिवगण नायक आतम ज्ञायक, जिनवर का सम्मान करें।।
कर्म रहित निष्पाप नाम के, भावी तीर्थंकर जय कार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म शिरोमणि जग हितकार।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ, शिवगणनाथ, निष्पाप नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–ग्यारहवें तीर्थंकर का सयंम नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–ग्यारहवें तीर्थंकर का पूर्णबुद्ध नाम का भी उल्लेख है।
3. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–बारहवें तीर्थंकर का अरअहम नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक चौदहवें तीर्थंकर

जय भगवंतं नाथ अनंतम, पार किये चौदह गुणथान।
राग द्वेष मद मोह विनाशी, तीर्थंकर उत्साह[1] महान।।
निष्कषाय[2] भावी तीर्थंकर, स्वयं स्वयंभू कहलाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रैकालिक तीर्थंकर ध्याय।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ, उत्साह नाथ, निष्कषाय नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक पंद्रहवे तीर्थंकर

वस्तु का स्वभाव धर्म है, धर्मनाथ की वाणी है।
ज्ञानेश्वर[3] तीर्थंकर का शुभ, नाम आत्म कल्याणी है।।
विपुल[4] तपस्या विमल भाव से, भावी तीर्थंकर करते।
भूत भविष्यत वर्तमान के, हितकारी जिनवर भजते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ, ज्ञानेश्वर नाथ, विपुलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक सोलहवें तीर्थंकर

समरस भावों से समता रख, शान्तिनाथ जिनवर ध्याते।
परमेश्वर[5] के परम पदों में, प्रतिदिन नमनान्जलि लाते।।
निर्मल नाथ है भावी भगवन, निर्मलता दे जायेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ चढ़ायेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ, परमेश्वर नाथ, निर्मलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–चौदहवें तीर्थंकर का उत्सव नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–चौदहवें तीर्थंकर का स्वयंभू नाम का भी उल्लेख है।
3. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–पन्द्रहवें तीर्थंकर का यशोधरा नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–पन्द्रहवें तीर्थंकर का विमलप्रभ नाम का भी उल्लेख है।
5. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–सोलहवें तीर्थंकर का बदल नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक सत्रहवें तीर्थंकर

जग की क्षण भंगुरता जाना, कुंथुनाथ जग छोड़ गए।
विमलेश्वर[1] वैराग्य धारकर, जगती से मुख मोड़ गये।।
चित्रगुप्त न जीवन लिखते, ये भावी तीर्थंकर है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ समर्पण है।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ, विमलेश्वर, चित्रगुप्त नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक अठारहवें तीर्थंकर

मछली सा चंचल यौवन है, अरहनाथ जी जान गए।
नाथ यशोधर तीर्थंकर है, जीवन को पहचान गए।।
समाधि गुप्त भावी तीर्थंकर, सन्यासी महिमा गाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म प्रवर्तक गुण गाये।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ, वर्धमान नाथ, समाधीगुप्त तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक उन्नीसवे तीर्थंकर

कलश चिन्हधारी प्रभुवर जी, मल्लिनाथ सब क्लेश हरें।
कृष्णमती के समवशरण में, भव्य जीव प्रवेश करें।।
स्वयं स्वयंभू नाथ हितैषी, भावी श्री भगवान बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को सदा नमै।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ, कृष्णमती, स्वयंभूनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-सत्रहवें तीर्थंकर का विनयेश्वर नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक बीसवे तीर्थंकर

मुनियों का व्रत मुनीसुव्रत ले, मुनियो के मुनि नाथ बने।
ज्ञानमती केवल ज्ञानी जिन, समवशरण सुरनाथ नमें।।
अनिवर्तक शुभ धर्म प्रवर्तक, भावी तीर्थंकर ध्याये।
भूत भविष्यत वर्तमान के, समवशरण धारी ध्याये।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत नाथ, ज्ञानमती, अनिवर्तक नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक इक्कीसवे तीर्थंकर

विश्व विलोकी अरिकुल नाशक, नमिनाथ जय भगवंता।
शुद्धमति तीर्थंकर हितकर, नमूं नमूं जय अरिहंता।।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, गुण धारी जयनाथ बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म धुरंधर चरण नमैं।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ, शुद्धमती, जयनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बाईसवें तीर्थंकर

बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर, नेमिनाथ गिरनार चढ़े।
भूतकाल के भद्रनाथ जी, शुद्ध भाव धर मोक्ष चढ़े।।
विमलनाथ भावी तीर्थंकर, विमल भाव से पूजेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ, भद्रनाथ, विमलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तेईसवे तीर्थंकर

पारस ने उपसर्ग सहा था, केवल ज्ञान मिला उपहार।
अतिक्रांत[1] जी है अतीत के, दीन दयालु धर्माधार।।
देवपाल देवाधिदेव जी, तीर्थंकर है दीनदयाल।
भूत भविष्यत वर्तमान को, अर्घ चढ़ाऊं भर भर थाल।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ, अतिक्रांत नाथ, देवपाल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चौबीसवें तीर्थंकर

वर्तमान के वर्धमान जिन, शासन नायक तारणहार।
शांतिनाथ[2] जी देव हमारे, भूतकाल के करुणा धार।।
अनंतवीर्य जी तीर्थंकर पर, भावी काल में होवेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान, शान्तियुक्त नाथ, अनंतवीर्य तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–तेईसवें तीर्थंकर का अनंतवीर नाम का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–चौबीसवें तीर्थंकर का शांतास् नाम का भी उल्लेख है।

अर्घ्यावली

समुच्चय अर्घ

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरु माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया।।
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस तीर्थंकर की अर्घावली

(चौबीस तीर्थंकर की अर्घावली पृष्ठ नं. 67 पर देखें)

चौबीस निर्वाण भूमि अर्घ्य

तीरथ है सम्मेद शिखर जी, बीस पधारे श्री निर्वाण।
आदिनाथ कैलाशगिरी से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।।
नेमिनाथ गिरनार शिखर से, निराकार पद पाया है।
पावापुर महावीर प्रभु ने, आठों कर्म नशाया है।।
तीर्थंकर चौबीसो जिनवर, परम धाम को पाये हैं।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाकर श्रद्धा शीश झुकाये हैं।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणस्थली श्रीसम्मेदशिखर-गिरनार-कैलाशगिरि चम्पापुर-पावापुर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत काल चौबीस तीर्थंकर अर्घ

निर्वाण सागर महासाधु जी, विमल प्रभु गुण गान करें।
धर्म प्रवर्तक श्रीधर जिनवर, नाथ सुदत्त सुध्यान करें॥
अमल प्रभु जी उद्धर अंगिर, सन्मति का जयघोष करें।
सिंधु कुसमाँजलि शिवगण मुनि, तीर्थंकर उत्साह भरे॥
ज्ञानेश्वर परमेश्वर जिनवर, विमलेश्वर यशोधर शुभ नाम।
कृष्ण ज्ञान अरु शुद्धमति जिन, भद्रअति शान्ति सुख धाम॥
सिद्धालय में अमल अचल जिन, शाश्वत आनंद पाये है।
भूतकाल के चौबीस जिनवर, पूरण अर्घ चढ़ायें है॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाण आदि शांति पर्यन्त भूतकाल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घम् निर्वपामिति स्वाहा।

भविष्य काल चौबीस तीर्थंकर अर्घ

महापदम् सुरदेव सुपारस, स्वयं प्रभु सर्वात्म जिनेश।
देव पुत्र कुल उदंक नाथ जिन, प्रोष्ठिल जयकीर्ति जी विशेष॥
मुनिसुव्रत अरनाथ नमूँ मैं, पूजूं श्री निष्पाप कषाय।
ध्याऊ नाथ विपुल निर्मल जिन, चित्र समाधि गुप्त कहाय॥
नाथ स्वयंभू अनिवर्तक जय, विमल नाथ जयपाल जपूँ।
अनंतवीर्य जी अंतिम जिनवर, भावी तीर्थंकर पुजूँ॥
तीर्थंकर बन कर्म नशाये, जगति का कल्याण करें।
अर्घ चढ़ाऊ भावी जिनवर, सौरभ पा उत्थान करें॥

ॐ ह्रीं श्री महापद्मआदि अनंतवीर्य पर्यंत भविष्य काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घम् निर्वपामिति स्वाहा।

वर्तमान चौबीस तीर्थंकर अर्घ

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमतिनाथ स्वामी गुणखान।
पद्म सुपारस चन्दा प्रभु जी, पुष्पदन्त जिन कर लूँ ध्यान॥

हे शीतल प्रभु शीतल करदों, श्रेयनाथ जिन हृदय विशाल।
वासुपूज्य पद बाल ब्रह्म हैं, विमल अनन्त धरम जयमाल।।
शान्ति कुन्थु अर मल्लि जिनेश्वर, मुनिसुव्रत व्रत पाऊँगा।
नमिनाथ नम नेमि शरण पा, पारस वीर को ध्याऊँगा।।
तीर्थंकर है धर्म शिरोमणि, कर्म नाश भव पार करो।
भक्ति भाव से अर्घ चढ़ाऊ, मम विनती स्वीकार करो।।

ॐ हीं ऋषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्धम् निर्वपामिति स्वाहा।

माँ जिनवाणी अर्घ

दिव्य ध्वनि का निर्मल जल ले, तत्वों का चन्दन लाया।
अंग पूर्व का अक्षत लेकर, धर्म पुष्प मन खिलवाया।।
नय निक्षेप का नेवज लेकर, गुणस्थान का दीप जला।
अष्ट कर्म का धूम उड़ाया, निराकार फल मोक्ष मिला।।
चारों अनुयोगों से पूरित, जिन आगम को जान रहे।
अष्ट द्रव्य मय अर्ध्य चढ़ाकर, जिनवाणी सम्मान करें।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायै: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन कम नौ करोड़ मुनिराजों का अर्घ्य

तीन घटाकर नौ करोड़ की, संख्या मुनिवर की जानो।
धरती पर जीवन्त जिनेश्वर, उन पर श्रद्धा हित मानो।।
तपसी जल से भिन्न कमल वत्, जीवन अपना जीते हैं।
ढाई द्वीप के मुनिराज को, अर्घ समर्पित करते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अढाईद्वीप-मध्ये-तीन-कम-नौ-करोड़-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया।।
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष।।

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

अर्घ-आचार्य श्री सौरभ सागर जी

जल से घुलते कर्म हमारे, चन्दन से मिलती शीतलता।
पुंज चढ़े जब गुरु चरणों, में पुष्प सुगन्धित है देता।।
नैवेद्य चढ़ाकर क्षुधा नशाऊँ, निज ज्ञान का दीप जलाऊँ मैं।
धूप चढ़ाकर कर्म जलाऊँ, फल से मोक्ष फल पाऊँ मैं।।
आठों द्रव्यों को एक मिलाकर, गुरुवर के गुण गाऊँ मैं।
भव भव के सब पाप नशे, अरिहंत अवस्था पाऊँ मैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी आचार्यश्री सौरभ सागर जी गुरुदेव चरणेभ्यो अन्घर्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ सिद्ध पूजूँ चावसों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भावसों।।1।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रचे गणी।
पूजूँ दिगम्बर-गुरुचरण शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।

सर्वज्ञ भाषित धर्म-दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश-रत्नत्रय जा बिना शिव नहिं कदा॥3॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पन मेरु नंदीश्वर, जिनालय खचर, सुर, पूजित भजूँ॥4॥
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा॥5॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जपि होय पति शिवगेह के॥6॥

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय॥7॥

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंच परमेष्ठिभ्यो नमः, प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यनुयोगेभ्यो नमः, दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः, सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः, जल के विषैं थल के विषैं आकाश के विषैं गुफा के विषैं पहाड़ के विषैं नगर नगरी विषैं ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताललोक विषैं विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः, पाँच भरत पाँच ऐरावत दशक्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनराजेभ्यो नमः, नन्दीश्वरद्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः, पंचमेरुसंबंधी अस्सी जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः, सम्मेदशिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार सोनागिर मथुरा तारंगा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः, जैनबद्री मूडबिद्री देवगढ़ चन्देरी पपौरा हस्तिनापुर अयोध्या राजगृही चमत्कार जी श्रीमहावीरजी पद्मपुरी तिजारा बड़ागाँव पुष्पगिरी, सौरभांचल पार्श्वनाथ, मंशापूर्ण महावीर आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः, ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपावन्तं श्रीवृषभादि महावीरपर्यन्तं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षत्रे आर्यखंडे............नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे.......... मासे............शुभे............पक्षे शुभ............तिथौ..... ....वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं (जलधारा) अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ (हिन्दी)

शांतिनाथ! मुख शशि उनहारी, शील गुण व्रत, संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमल दल लाजें॥1॥

पंचम चक्रवर्ती पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमौं शांतिहित शांतिविधायक॥2॥

दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥3॥

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत् पूज्य पूजौं सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघ को॥4॥

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके, इंद्रादिदेव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वर वंश जगत् प्रदीप, मेरे लिए करहु शांति सदा अनूप॥5॥

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को औ यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे॥6॥

होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा।

होवे चोरी न जारी, सुसमय वरषे हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारें, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी॥7॥

घाति कर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करें सब जगत् में, वृषभादिक जिनराज॥8॥

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाँकू सभी का॥9॥

बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौ सेऊँ, चरण जिन के मोक्ष जौ लौ न पाऊँ॥10॥

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहे प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने॥11॥

अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदु:ख से॥12॥

हे जगबंधु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥13॥

विसर्जन पाठ (हिन्दी)

बिन जाने या जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन भी नहीं, क्षमा करो भगवान्॥
मंत्र हीन धन हीन हूँ, क्रिया हीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजे भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण॥
आए जो जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।
ते अब जावहु कृपा कर, अपने अपने थान॥

इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलि

(इसके पश्चात् खड़े होकर आरती करें)

आसिका लेने का पद

श्री जिनवर जी की आसिका, लीजे शीश चढ़ाए।
भव-भव के पातक कटें, दु:ख दूर हो जाए॥

(स्तुति या भजन आदि बोलते हुए वेदी सहित प्रतिमाजी की तीन प्रदक्षिणा देकर धोक देनी चाहिए)

॥इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र

हृदय कमल में अर्हत पद का स्थापन जो है करना,
कार्मन काठ जलावन कारण अग्नि ज्वाला है बनना।
निर्मल है वह निर्मल करता अर्हत पद का दाता,
बारम्बार नमूँ मैं उनको, पाऊँ अक्षय साता।
हृदय कमल की आठ पँखुड़ी उनमें क्रम से रखना,
अर्हंत, सिद्ध आचार्य उपाध्याय, साधु सर्व विचरना।
सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र उचरना,
ऐसे आठों पूज्यनीय को, चित में फिर फिर धरना।
ऊँ बीजाक्षर प्रथम उचारै, नमः पल्लव करिये,
ध्यान धरै इन आठों पद का, आनन्द उर में भरिये।
अरहंत पद का ध्यान किये से, सिर की रक्षा होवे,
सिद्ध समूह जपन करने से, मस्तक रक्षित होवे।
सूरि सुगुण मन में ध्याने से, नेत्र सुरक्षित होवे,
चौथे पद के गुण चिंतन से, घ्राण सुरक्षित होवे।
मुख की रक्षा करे साधुगण, दर्शन गर्दन रक्षै,
नाभि रक्षे सप्तम पद, जो सम्यग्ज्ञान सुदक्षै।
सम्यक्चारित्र सर्व अंग को, पाद पर्यन्त सुरक्षे,
ऐसे सकलीकरण करन से, होवे पूजक अक्षै।
ऋषि मण्डल यह पूजन भारी, इसको विधि से करिये,
विघ्नविनाश करें सुखदाता, श्री ब्रह्मचारी उचरियें।

सब द्वीपों के मध्य जम्बूद्वीप बसे,
उसकी है आठ दिशा पूरब आदि लसे।
अर्हंतादि पद आठ उनमें राजत हैं,
करिये उनका ध्यान पाप पलावत है।
मध्य सुदर्शन मेरु कंचनमय सोहे,
उपरि सिंहासन माहि अक्षर ह्रीं मोहे।
उनमें चौबीस जिनेश उनके गुण भारी,

अक्षय निर्मल शांत ताप जाड्य हारी।
निरहंकार निरीह सार, सार गुण सोहे,
सौम्य शुद्ध शुभ रूप तीन लोक मोहे।
तीन लोक के स्वामी यातें राजस है,
कर्म घातिया चूरे यातैं तामस है।
सदगुण से भरपूर सात्विक सोहत है,
ज्ञान तेज से सूर्य भ्रमतम खोवत है।
रूपगंध रस वर्ण इनसे दूर रहे,
तो भी है साकार समरस पूर रहे।
पर को दिया त्याग निज रस में पागे,
परमौदायिक देह आतम गुण जागे।
चूरे है सब कर्म तन को है छोड़ा,
निज रस पी संतुष्ट पर से मुँह मोड़ा।
करी कालिमा दूर आकांक्षा पूरी,
संशय रहा न लेश सब आशा पूरी।
ईश्वर ब्रह्मा बुद्ध ज्योति रूप खड़े,
शाश्वत सिद्ध स्वरूप सब में देव बड़े।
लोकालोक प्रकाश करते नाहि थके,
ऐसे श्री ह्रीं देव मेरे मन में धरे।
एक वर्ण दो वर्ण तीन वर्ण धारी,
चार पाँच हैं वर्ण सब के अधिकारी।
ऋषभादिक चौबीस तीर्थंकर सब ही,
ध्याओ उनको नित्य जैसे निम्न कही।
अर्ध चंद्र आकार ह्रीं का नाद कहा,
उसका वर्ण है श्वेत जैसे चन्द्र महा।
उसमें ध्याओ देव श्वेत वर्ण वाले,
चन्द्रप्रभु पुष्पदंत सब के रखवाले।
श्याम वर्ण की देह बिंदी की कीजै,
उसमें लिखिये नेमि मुनिसुव्रत कीजै।
मस्तक ऊपर भाग लाल वर्ण सोहे,

पद्मप्रभु वासुपूज्य अरुँण वर्ण मोहे।
शिर संलीन ईकार नीलम वर्ण कहा,
सुपार्श्व पार्श्व महाराज थापूँ पूज्य महा।
सोलह श्रीजिन देव कंचनमय देहा,
वे-ह-र मध्य लिखेय होवे सुखगेहा।
रागद्वेष मद मोह जीते इन सबने,
मायालीन में ये राजत हैं सब रे।
इनका सदा ध्यान किये जो ज्वाला निकले,
उनमें वेष्ठित देह मेरी जो उजले
तब नाही विषधर जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
श्री ऋषिमण्डल मध्य ह्रीं का परिकर है,
उसमें रक्षित देह मेरी सुखकर है।
तब नाहिं नागिन जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
सर्वऋद्धि के ईश अर्हत गणधर हैं,
उनके तेज से लोग वेग सब ही व्याप्त है।
उनका ध्यान किये परम सौख्य होगा,
विलय जायेंगे दु:ख मेरे अति वेगा।
पाताल, लौकिक देव, मध्य लोकवासी,
निर्जर ऊरध लोक सब विमानवासी।
तुम सब ही जिन भक्त साधर्मी भाई,
करना मेरी सहाय सुनिये मनलाई।
मुनिवर है जगमाहिं अवधि श्रुतधारी,
विक्रिया चारण आदि सब ही ऋद्धिधारी।
मुझ पर कीजै कृपा तुम रक्षक सबके,
अतएव पूजूँ पायें विघ्न हरो जनके।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्तुति

हे वीर प्रभो महावीर प्रभो, तेरे चरणों में आया हूँ।
सब पाप ताप संताप हरो, मैं अर्चन कर हर्षाया हूँ॥
आओ आओ प्रभु एक बार, मेरे मन का प्रक्षाल करों।
हे महाश्रमण हे वर्धमान, तुम सन्मति दे जंजाल हरों॥
प्रभु मंशापूरण करते हो, प्रभु संशय तिमिर भी हरते हों।
मैं मन से पूजा तेरी करूँ, सुख सिन्धु से भी भरते हों॥1॥
श्रद्धा का जल कर में लेकर, भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरूवर पावन, दीप धूप वन्दन भाया॥
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु, आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की, पूजा कर सुख पाऊँगा॥2॥
महामना हे महामुनि हे, महायोगी महाज्ञानी हो।
महाशक्ति हे महाज्योति हे, महाप्रभु महादानी हो॥
महाव्रतों को महाभाव से, महावीर ने धार लिया।
मंशापूरण महावीर बन, मानव का उद्धार किया॥3॥
भावों की शुभ निर्मलता ही, भव बन्धन को नित काटें।
निज स्वभाव में रम जा चेतन, खोल राग की सब गाठें॥
भाव-साधना-भाव-समाधी, भाव स्वभाव मे लीन रहें।
द्रव्य भाव द्वय अर्घ्य समर्पित, श्रद्धालय में लीन रहें॥4॥
अन्तिम गर्भ हो चरमोत्तम तन, महावीर-सा बन जाऊँ।
महाअर्घ चरणाम्बुज देकर, वज्र कर्म सब विनशाऊँ॥
तीर्थंकर का गर्भाराधन, गर्भ दोष का नाश करे।
त्रय ज्ञानी समकित तीर्थंकर, धर्मात्मक उल्लास भरे॥5॥
जन्म काल का अतिशय सुखकर, तीर्थंकर ही पाते हैं।
कल्याणक शुभ जन्म मनाकर, नर देवा हर्षाते हैं॥
जन्म मरण की भ्रमण शृंखला, तब पूजा से घट जाये।
अर्घ समर्पित तव चरणों में, मोह तिमिर सब छट जाये॥6॥
वर्धमान अतिवीर वीर जिन, महावीर शुभ नाम कहो।
सद्बुद्धि सन्मार्ग प्रदाता, सन्मति का गुणगान अहो॥
राग-द्वेष मद लोभ मोह सब, नामोच्चारण दूर करें।
अर्घ समर्पित मंशापूरण, धर्मभाव भरपूर भरे॥7॥

दीर्घ साधना कर्म निर्जरा, धर्म ध्यान से नित साधें।
तन मन की इच्छा ज्वाला को, शुक्ल ध्यान जल से नाशें॥
महावीर की वीतरागता, निर्मल-निच्छल-मनहारी।
पूर्णअर्घ चरणों मे अर्पित, वर्धमान दीक्षाधारी॥8॥
केवलज्ञानी अतिशय धारी, चार घातियाँ नाश किया।
प्रातिहार्य आठों सज्जित है, समवशरण प्रवास किया॥
विपुलाचल वैभार गिरी या, पुण्यवान जग जीव जहाँ।
दर्शन पूजन व्रत उपदेशा, पाकर तिरते जीव यहाँ॥9॥

दोहा– अल्पज्ञान लब्ध्यक्षरा, पूरण केवल ज्ञान।
महावीर की देशना, करें आत्म कल्याण॥10॥

भू भीतर देवों द्वारा ही, पूजा सेवा नित होती।
वर्षों तक ना पुण्योदय था, दर्शन फिर कैसे होती॥
सात नवम्बर भू से प्रगटे, मंशापूरण श्री भगवान।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति गाऊँ, वर्धमान महावीर महान॥11॥
भक्ति में तन्मय हो करके, चिन्मय मुरत पाया है।
सिद्ध निरामय निर्मल निश्चल, अविनाशी सुख पाया है॥
हो विरक्त जग उलझन से प्रभु, तेरे दर पर आऊँगा।
आत्म ओज का उद्भव होवे, महावीर गुण गाऊँगा॥12॥
सुख राशि गुणदाता जिनवर, दया सिन्धू महावीर प्रभो।
विघ्न हरण हे मंशापूरण, वर्धमान अतिवीर विभो॥
परमेश्वर हो, प्रतिपालक हो, जिन शासन के नायक हो॥
महा-अर्घ्य चरणों मे अर्पित, सौरभ सागर ज्ञायक हो॥13॥

दोहा

महावीर जिनराज का, अद्भुत है दरबार।
भक्ति से पूजा करूँ, नमन करूँ शतबार॥14॥

धत्ता– जय जय महावीरा भवदधि तीरा, गुण गंभीरा अतिवीरा।
मम धर्म बढ़ावे जिनपद पावें, सौरभ सागर नत धीरा॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र पंचकल्याणक संयुक्त शिवपद-कर्त्ता-भव-जल-निधी सर्वविघ्नव्याधिहर्ता तव भक्ति प्रसादात् सर्व जीव कल्याणमस्तु दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु धन-धान्य समृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु सर्व जीव रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु सम्यग्दर्शन ज्ञान-चारित्र-वृद्धिरस्तु सर्व-ऋिद्धि-सिद्धि-भवतु रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की पूजा

स्थापना

सौरभ सागर गुरु को, नमन हो बारम्बार।
श्रद्धा पुष्प चढ़ा रहे, करना तुम उद्धार।।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो, सौरभ सागर महाराज।
जिह्वा गुण गाती रहे, हो मुनिवर सरताज।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

रगड़ रगड़ कर ये तन धोया, मन का मैल ना धो पाए।
इसीलिए तो गुरुवर क्षीरोदधि, से जल लेकर आए।।
निर्मल जल अर्पित करते हैं, जन्म जरामृत नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

तरह तरह के लेप किए पर, तन संताप ना दूर हुआ।
जितना इसका शमन किया यह, उतना ही फिर और बढ़ा।।
मलयागिर चन्दन अर्पित तुमको, भव संताप को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

संसार दुःखों से भरा हुआ, नहीं मिलता मुझे किनारा है।
मोह माया से जकड़ा जीवन, पर ना कोई सहारा है।।

उज्जवल अक्षत अर्पित तुमको, इनको तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम वेग से घिरे हुए हैं, कैसे बन्धन तोड़े हम।
तरह तरह के इत्र लगाए, इन्द्रीय दास बने हैं हम॥
कोमल पुष्प समर्पित तुमको, काम बाण को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

नाना मिष्ट पकवान डकारे, फिर भी क्षुधा ना शान्त हुई।
जिव्हा के वश होकर मैंने, भक्ष अभक्ष की सुधि खोई॥
सरस नैवेद्य अर्पित तुमको, क्षुधा रोग को ध्वस्त करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में क्षुधा रोग विनाशनाय-नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

अज्ञान तिमिर ने हमको घेरा, कैसे मंजिल पाएंगे।
तेरे ज्ञान की ज्योति पाकर, सहज पार हो जाएंगे॥
ज्ञान से ज्ञान की ज्योति जलती, दीपक तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अष्ट कर्म की दलदल में हम, हरदम फंसते जाते हैं।
पाप कर्म हम करते रहते, फल से नहीं घबराते हैं॥

धूप समर्पित तव चरणों में, अष्टकर्म का दहन करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ हूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

लौंग बादाम और किशमिश लेकर, तेरे द्वारे आए हैं।
मोक्ष के फल का स्वाद बता दो, इच्छा मन में लाए हैं॥
फल अर्पित है चरण तुम्हारे, मुक्ति रमा का वरण करूँ।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ हूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोक्ष फल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प नैवेद्य, दीप धूप फल ले आए।
तब चरणों में अर्घ चढ़ा के, अष्टम वसुधा पा जाए॥
हम अर्घ समर्पित करते हैं, गुरुवर तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ हूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ-पद-प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **भव भव से भटके फिरे, कोई ना तारनहार।**
सौरभ सागर गुरु मेरे, तुम ही करो उद्धार॥

जयमाला

लय (दे दी हमें आजादी....)

सौरभ सागर जी देव, गुरुदेव हमारे।
करते हैं भव से पार, गुरुदेव हमारे॥
माँ चन्द्रप्रभा कोख में, जब आप थे आए।
शुभ स्वप्न देख माता भी, फूली ना समाए॥

गज, सर्प, आग, सूर्य भी, देख लिया था।
अद्वितीय पुत्र जन्मेगा, ये जान लिया था॥1॥

जसपुर में गुरुदेव, तुमने, जन्म लिया था।
जसपुर की माटी को भी, तूने धन्य किया था॥
गुरू पुष्पदंत संघ, जसपुर में पधारे।
बालक सुरेन्द्र पुष्प संग, चल दिया प्यारे॥2॥

तपअग्नि में बारह वर्ष, गुरूदेव तपाया।
मैं भी बनूँ तब सम, गुरु ये मन में है भाया॥
आचार्य गुरुदेव ने, सौरभ बना दिया।
मुनिबाने से गुरुदेव ने, तुमको सजा दिया॥3॥

बाली उमर से सौरभ जी, अमृत पिला रहे।
आहत भी राहत पाके, आशीष पा रहे॥
संस्कार अलख देव, जन जन में जगाए।
संस्कार प्रणेता तभी, गुरुदेव कहलाए॥4॥

सृजन किया गुरुदेव ने, रचना कई लिखी।
सिद्धान्त शतक एक है, नायाब नव कृति॥
जिसने भी गुरुदेव का, साहित्य पढ़ा है।
जैनत्व बोध करके, उसका पाप कटा है॥5॥

बच्चों व शिक्षकों को, चमड़ा मुक्त किया है।
सौरभाँचल तीर्थ का, उपहार दिया है॥
हिसार की नसिया का, भी उद्धार है किया।
मनहर पारस क्षेत्र नाम, उसको दे दिया॥6॥

भू गर्भ में दबे थे, आदि पार्श्व अर वीरा।
अपने ज्ञान योग से, तुम जान लिया था॥
ज्ञान योगी देव गुरूदेव कहाए।
गुरूदेव के जयकार से गगन गुंजाए॥7॥

झज्जर के ग्राम झाडली में वीर थे प्रकटे।
ना देगे वीर मूर्त, ग्रामवासी अड़ गए।।
भक्ति की शक्ति से, महावीर बुलाए।
मंशा पूर्ण वीर, महावीर कहलाए।।8।।

पुष्पगिरी तीर्थ अप्रैल दश महा।
मेला लगा दृश्य अनुपम रहा महा।।
चारों दिशाएं गुंज उठी नमस्कार से।
आचार्य पद प्रतिष्ठा हुई जयजयकार से।।9।।

हम भी तो तेरे दर पे, अरदास लाए हैं।
दर्शन तिहारे मिलते रहे, प्यास लाए हैं।।
जीवन में मेरे 'आशा' की, तुम ज्योत जगा दो।
सुना है तेरा नाम, मेरी बिगड़ी बना दो।।10।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **सौरभ सागर गुरु का, करूँ हमेशा ध्यान।**
भक्त की हर श्वास में, सौरभ सागर नाम।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ - आचार्य श्री सौरभ सागरजी

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन श्रृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
आचार्य श्री 108 सौरभ सागर चालीसा

मनमंदिर में आन बसे, सौरभ सागर महाराज।
धर्म की राह दिखा दई, और सँवारे काज॥
ऐसे गुरु का यदि रहे, भक्त के सिर पर हाथ।
रोग शोक सब दूर रहे, सुख की हो बरसात॥

सौरभ सागर गुरु हमारे, भक्तों के सब कष्ट निवारे।
ये गुरुवर है अन्तर्यामी, मन की सारी बाते जानी॥
मनमोहक मुस्कान तुम्हारी, छवि तुम्हारी है मनहारी।
चन्द्रप्रभा जी की कोख में आए, शुभ लक्षण उनको दर्शाए॥
उगता हुआ इक सूरज देखा, सर्पो का एक जोड़ा देखा।
इक जंगल में आग भी देखी, हाथी की इक जोड़ी देखी॥
श्री पाल जी को स्वप्न बताए, फल जाना तो बहु हरषाए।
पुत्र रत्न इक घर आएगा, दावानल सा यश पाएगा॥
मस्त हस्ती सम भ्रमण करेगा, सूरज सम जग में चमकेगा।
बाबा की आँखों का तारा, सुरेन्द्र नाम लगता था प्यारा॥
गुरु पुष्प संघ जसपुर आया, इस बालक का भाग जगाया।
अद्‌भुत प्रतिभा देखी तुझमें, ज्ञानयोगी इक छिपा था तुझमें॥
पिता से तुमको मांग लिया था, मात पिता ने सहर्ष दिया था।
तप अग्नि में तुम्हें तपाया, बारह बरस का समय बिताया॥
क्षमावाणी का शुभ दिन आया, दीक्षा धारुँ ये था भाया।
21 सितम्बर दिन पुण्यशाली, होती गुरु की दीक्षा दिवाली॥
चहुँ दिशि अम्बर बने तुम्हारे, वीतरागी मुद्रा जब धारे।
वाणी तेरी शीतल चन्दन, शीघ्र मिटाती मन का क्रन्दन॥
जिस नगरी भी कदम बढ़ाए, अतिशय अपने खूब दिखाए।
धर्म की ऐसी अलख जगाई, 'संस्कार प्रणेता' उपमा पाई॥
जेल में जो उपदेश सुनाए, मद्य माँस से लोग छुड़ाए।
जब बच्चे उपदेश हैं सुनते, शहद ब्रैड व चमड़ा तजते॥
जिस नगरी भी किया चौमासा, भक्तों के मन भर दी आशा।
निर्बल तुझसे बल पा जाए, वीराने हरियाली पाए॥

जंगल में मंगल करते हो, संकट सारे तुम हरते हो।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, उसकी तो किस्मत है सँवारी॥
एक प्रेरणा तुमसे पाई सौरभाँचल की नींव धराई।
सौरभाँचल एक तीरथ प्यारा, नव जिनग्रह का देख नजारा॥
वृहद आदि पद्मासन प्रतिमा, नीलाम्बर का लगा चँदोवा।
श्रुत स्कन्ध मंदिर बनवाया, द्वादशांग का मान बढ़ाया॥
रत्न चौबीसी मन को भाए, देख देख के हिय हरषाए।
सूनी थी हिसार की नशिया, पर भू भीतर दबी थी निधिया॥
अपने ज्ञान ध्यान से जाना, त्रय जिनदेवा भीतर जाना।
हाथों से मिट्टी खुदवाई 'पार्श्व' 'आदि' 'वीरा' छवि पाई॥
जयकारों से गगन गुँजाए, ज्ञानयोगी गुरुदेव कहाए।
'मनहर पारस क्षेत्र' कहाया, सहस्त्र कलश से न्हवन कराया॥
मंशापूर्ण श्री महावीरा, सेवा भाव जगावे धीरा।
जीवन आशा नाम पुकारा, विकलांगों का बने सहारा॥
ज्ञानी मन चिंतन करता है, हर पल काव्य ग्रन्थ लिखता है।
धर्म गगन में करे विहारा, "सिद्धांत शतक" आगम है प्यारा॥
सब शूलों की सेज उठाते, जैनत्वो का बोध कराते।
पापों के दहकते अंगारे, प्रेरक प्रवचन बुझाते सारे॥
फैशन एक अभिशाप बताया, गर्भपात से सबको बचाया।
जैन विधान सदा करवाते, भक्तों के शुभ भाव जगाते॥
ख्याति लाभ की नहीं कामना, पूजा की भी नहीं चाहना।
विज्ञापन से दूर ही रहते, चर्या सावचेत हो करते॥
आगम के रत्नाकर गुरुवर, शान्त सौम्य छवि सुन्दर गुरुवर।
आशीर्वाद गुरु का फलता, जीवन सहज सरल हो चलता॥
तीर्थराज सम्मेद शिखर है, श्री सौरभांचल का परिसर है।
सहस्र वर्ष प्राचीन है प्रतिमा, अतिशयकारी पारस महिमा॥
10 अप्रैल का शुभ दिन आया, पुष्पगिरी में उत्सव छाया।
रवि पुष्य नक्षत्र कहाया, पुष्पदन्त ने सूरी बनाया॥
देश विदेश से यात्री आये, दृश्य देखकर अति हर्षाये।
सौरभ गुरु को शीश नवाया, धन्य धन्य सौभाग्य जगाया॥

जिस धरती पर कदम बढ़ाए, वो माटी चन्दन बन जाए।
घर घर ज्ञान के दीप जलाए, अज्ञान तिमिर मन का हट जाए।।
दर्शन पा मन पुष्प खिला है, वर्द्धमान का दर्श मिला है।
जब से तेरा साथ मिला है, 'हम-सब' को भगवान मिला है।।

दोहा– सौरभ सागर चालीसा, मन से जो भी ध्याय।
त्याग धर्म बढ़ता रहे, गुरु अनुकंपा पाए।।
गुरुवर तेरे चरण में, नमन हो बारम्बार
पापों का क्षय हो मेरा, भव से हो जाऊँ पार

(9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रूं सौरभ सागर गुरुवे नमः।

आरती आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की

(लय - तन डोले, मन डोले ...)

सौरभ सागर की, गुण आगर की
शुभ कंचन दीप सजाय के, आज उतारूँ आरतिया
माता चन्द्रप्रभा जी के जाये, श्रीपाल जी के सुत कहलाये
पुष्पदंत जी की बगिया से, ये कोमल पुष्प है आये
सुगन्धित कोमल पुष्प है आये
गुरु की सुरभि से सुरभित होकर कंचन दीप सजाय के ...
गुरु की छवि है इतनी निराली मन को बहुत लुभाती
महिमा गुरुवर के वचनों की जन-जन को हर्षाती
जय गुरुवर जन-जन को हर्षाती
इनके चरणन शत् शत् वन्दन शुभ कंचन दीप सजाय के...
जो भी इनकी शरण में आए, सब संकट कट जाये
हम भी भटके हैं जन्मों से हमको भी पार लगाये
हो जय गुरूवर, हमें भी पार लगाये
यह विनती करें तोसें अरज करें शुभ कंचन दीप ...

कुछ विशेष जाप

1. ॐ ह्रीं नमो अर्हते रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा अप्रतिहत-शक्ति भवतु ह्रीं नमः।
3. ॐ श्रीं ह्रीं अर्हं श्री नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वसौख्यं कुरु कुरु नमः।
5. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं मम सर्व विघ्न शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं श्रीं वद् वद् वाग्वादिनी ह्रीं नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्टबुद्धिणं।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं।
9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः।
10. ॐ ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वो सहिपत्ताणं झ्रों झ्रों नमः।
12. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं मम इष्ट कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीराय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

जीवन परिचय

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

जन्म : कार्तिक कृष्णपक्ष अष्टमी (गुरुवार)
22 अक्टूबर, 1970 जसपुरनगर (छत्तीसगढ़)

बचपन का नाम : सुरेन्द्र कुमार

पिता का नाम : श्री श्रीपाल जैन

माता का नाम : श्रीमती चन्द्रप्रभा जैन

गृहत्याग : शुक्रवार, 08 अप्रैल, 1983

क्षुल्लक दीक्षा : शुक्रवार, 17 जनवरी, 1986 छत्तरपुर (म.प्र.)

ऐलक दीक्षा : सोमवार, 27 जून, 1988 अंदेश्वर पार्श्वनाथ (राज.)

मुनि दीक्षा : 21 सितम्बर, 1994 इटावा (उत्तर प्रदेश)

दीक्षा गुरु : पुष्पगिरि प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी महाराज

आचार्य पद : 10 अप्रैल, 2022 (पुष्पगिरि)

राजकीय अतिथि : झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड

:: विशेष कृति ::

1. सिद्धान्त शतक
2. जैनत्व का बोध
3. धर्म गगन में करें विहार
4. प्रेरक प्रवचन
5. फैशन एक अभिशाप
6. शूलों की सेज
7. दहकते अँगारे
8. आओ लौट चलें
9. पत्थर की मानवाकृति
10. प्रतिमा से प्रतिभा जगे
11. सृजन के द्वार पर
12. हे इन्सान! मत बन तू शैतान
13. जैन शिक्षा भाग-1, 2, 3, 4
14. आराध्य आराधना
15. मंगलं पुष्पदन्ताद्यो
16. जैनाचार संहिता
17. श्रावकाचार संहिता
18. श्रमणाचार संहिता
19. भक्ति-सौरभ
20. अर्हत् चरण सपर्या (जिन-देवार्चना)

विधान

21. श्री भक्तामर स्तोत्र
22. श्री कल्याण मन्दिर
23. स्वयंभू चौबीसी
24. श्री मंशापूर्ण महावीर
25. चौंसठ ऋद्धि सिद्धि
26. आचार्य पुष्पदन्तसागर
27. श्री सम्मेदशिखर
28. माँ जिनवाणी
29. कर्मदहन
30. श्री नवग्रह जिनदेव
31. श्री पुष्पगिरी तीर्थ
32. जैन विधान संग्रह

:: पुण्यार्जक परिवार ::

* **मनोज कुमार जैन, ललित जैन, अतिशय जैन, अर्पण जैन** मै. पारसनाथ पोली बटन, दिल्ली-110031 मो.: 9810056286
* **मुकेश जैन, सौरभ जैन (सौरभसागर फैब्रिक्स)** बिहारी कॉलोनी, दिल्ली
* **श्री शिवसेन जैन, पंकज जैन, धीरज जैन** बलबीर नगर, दिल्ली
* **श्रीमती रेनू जैन श्री संजय जैन** 108 "सौरभांचल" पुष्पांजलि, दिल्ली
* **श्रीमती सुदेश जैन धर्मपत्नी स्व. श्री अनिल कुमार जैन गौरव जैन, खुशबू जैन** अंसारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली
* **विपुल जैन, पारस जैन (चिलकाना वाले)** आजाद नगर, दिल्ली
* **श्री सुभाष चन्द जैन, अचिन जैन, अंकित जैन (उमरपुर वाले)** बलबीर नगर, दिल्ली
* **प्रवीण जैन, दीपक जैन, अक्षत जैन (खेकड़ा वाले)** बलबीर नगर, दिल्ली
* **गौरव जैन, दीपक जैन,** आकाश हौजरी, गांधी नगर, दिल्ली
* **सतीश जैन, देवेश जैन (ककडीपुर वाले)** लक्ष्मी नगर, दिल्ली
* **उमेश जैन सीमा जैन** कृष्णा नगर, दिल्ली
* **सचिन जैन, विकास जैन, गौरव जैन** ए-37, सूरजमल विहार, दिल्ली
* **विकास जैन निधि जैन** कृष्णा नगर, दिल्ली
* **नीलू जैन, श्रीमती कल्पना जैन, श्री रवि कुमार जैन** नया बाजार, ग्वालियर
* **प्रदीप कुमार जैन, मंजू जैन, अक्षय जैन, आरुषि जैन, अवन्या जैन** सूर्य नगर, गाजियाबाद
* **मुकेश जैन, प्रीति जैन, दर्शित जैन, सुन्ह जैन** भोलानाथ नगर, दिल्ली
* **पवित्र जैन (जय पारस गोल्डटच सेन्टर)** कृष्णा नगर, दिल्ली
* **श्रीमती मीना जैन धर्मपत्नी स्व. श्री ओमप्रकाश जैन (बट्टनलाल) श्री मनोज जैन, श्रीमती मंजू जैन, मनीष जैन** (भिण्ड वाले)
* **चिन्मय जैन सुपुत्र दीपक जैन (चिंकी हौजरी)** ईस्ट आजाद नगर, कृष्णा नगर, दिल्ली

* **धनकुमार जैन, प्रणय जैन, ध्वनि जैन, सुविज्ञ जैन** बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली
* **राजीव जैन, अमन जैन, यशी एंटरप्राइज** (Campio Files) शंकर नगर, दिल्ली
* **श्रीमती आभा जैन, श्री नीरज जैन, प्रक्षाल जैन, सिद्धार्थ जैन** हंस वाटिका, रेलवे रोड, शान्ति नगर, मेरठ
* **श्रीमती अर्चना जैन धर्मपत्नी श्री अनिल जैन, अक्षत जैन, आर्जव जैन**
  शंकर नगर, दिल्ली
* **जिन पूजन संगठन** मेरठ
* **श्वेता जैन-शांतनु जैन, वत्सल जैन** सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली
* **अनिल जैन, माधुरी जैन, अमन जैन, महिमा जैन, विदित जैन** नेहा साड़ी, भिण्ड
* **बेबी वान्या जैन, रितांशी भंसाली** 47, वीर नगर, जैन कॉलोनी, दिल्ली-07
* **सुश्री अमिता, अंजू, अंचल, आशीष जैन** अपने माता-पिता
  श्रीमती प्रमोद कुमारी जैन एवं श्री महेन्द्र कुमार जैन की पुण्य स्मृति में (लखनऊ)
* **संजय जैन ममता जैन श्रेष्ठ जैन** ई-13/6, कृष्णा नगर, दिल्ली
* **अवनीश जैन अलका जैन** सरधना
* **रवि जैन सोनिया जैन** 79, राम विहार, दिल्ली
* **कोमल जैन रिषभ जैन** 164, योजना विहार, दिल्ली
* **अजय जैन रीना जैन** डी-107, सूरजमल विहार, दिल्ली
* **जिनेश जैन सीमा जैन** 60, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली
* **नवीन जैन सुनीता जैन** ए-137, सूरजमल विहार, दिल्ली
* **पंकज जैन नलिनी जैन** ए-141, सूरजमल विहार, दिल्ली
* **अशोक जैन बीना जैन** सी-150, आनन्द विहार, दिल्ली
* **श्रीमती चीना जैन धर्मपत्नी श्री लवकेश कुमार जैन, शुचि जैन, श्रीमती मानसी जैन धर्मपत्नी श्री अर्णव जैन,** भोलानाथ नगर

सौरभांचल प्रकाशन

साहित्य प्रकाशन में ऑन लाईन सहयोग करने के लिए

Scan & Pay

UPI ID : 8448677688@ibl

A/c No.	: 45922900000921
A/c Name	: SAURBHANCHAL PRAKASHAN
Bank	: DCB BANK LIMITED
IFSC Code	: DCBL0000459

8448677688

कृपया इस नम्बर पर (व्हाटसअप)
जमा राशि का स्क्रीन शाट भेजकर रसीद प्राप्त करें।

विधान पुस्तक प्राप्ति स्थल

सौरभांचल प्रकाशन

गणधर गारमेन्टस
IX/842, प्रेम गली नं. 3-सी,
मुलतानी मौहल्ला, सुभाष रोड,
गांधी नगर, दिल्ली-110031

मनोज कुमार जैंन
E-17/9, कृष्णा नगर,
दिल्ली-110051
मो. : 9810056286

1200 वर्ष प्राचीन भूगर्भ से प्रगटित 1008
श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी जी गंगनहर, मुरादनगर

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान ''सौरभाँचल'' (निर्माणाधीन)
श्री सम्मेद शिखर जी मधुबन

श्री 1008 पद्मप्रभु भगवान पुष्पगिरी

सौरभांचल चैरिटेबल हॉस्पिटल
श्री दिगम्बर जैन तीर्थ 'सौरभांचल' गनौर
संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
आचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज